आर्य वन्दना

ओ३म्

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

हिमाचल की घाटियों को वेद मंत्रों से गुंजित करने वाले स्वामी सुमेधानंद का महाप्रयाण

♦सत्यव्रत सामवेदी

आर्य जगत् के तपोनिष्ठ संन्यासी, देशभक्ति की आग में आपाद मस्तक निमज्जित, हिमाचल की घाटियों को वेद मंत्रों से गुंजित करने वाले वेदों के ध्वजवाहक, सत्य और न्याय के उद्गाता एवं यज्ञरूप स्वामी सुमेधानन्द ने 5 अगस्त, 2015 को महाप्रयाण कर दिया। यह आर्य जगत् एवं राष्ट्र की महान क्षति है। वे आजीवन ब्रह्मचारी रहे। बाल्यावस्था में ही उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया और वे सत्य की खोज में देशाटन करने लगे। वे अनेक सम्प्रदायों के साधु सन्तों से मिले परन्तु उन्हें कही भी शांति नहीं मिली। अन्त में वे आर्य समाज के सम्पर्क में आये और महर्षि दयानंद की असीम चुम्बकीय शक्ति ने उन्हें हमेशा के लिए अपना बना लिया और वे दयानंद और वेदों के उद्गाता बन गये। हिमाचल में सुरम्य पर्वतों की गोद में रावी नदी के किनारे चम्बा नामक राज्य में उन्होंने दयानंद मठ की स्थापना की। यह मठ वेद प्रचार का हिमाचल में प्रमुख केन्द्र बन गया और हिमाचल की घाटियां वेद मंत्रों से गूंजनें लगी। उनके भक्तों की संख्या बहुत लम्बी थी और हिमाचल, दिल्ली तथा पंजाब के अनेक समृद्ध परिवार उनके प्रति असीम आदर भाव रखते थे। प्रसिद्ध उद्योगपति श्री मुंजाल का उनके प्रति असीम श्रद्धा भाव था और दिल्ली के अतिथि कक्ष में उनके आवास एवं भोजन की स्थाई व्यवस्था थी। उन्हें इस बात का दुःख था कि जिस संगठन ने सारे विश्व को यह संदेश दिया हो कि-'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए' आज वही संगठन असत्य की नींव पर खड़ा है। आर्य समाजों में निहित स्वार्थी तत्वों ने प्रवेश कर लिया है और वे फर्जी सदस्य और फर्जी प्रतिनिधि बनकर आर्य समाजों पर कब्जा कर रहे हैं और उसकी सम्पत्ति को बेच रहे हैं। सार्वदेशिक सभा के विवादों को समाप्त करने के लिए संचालन समिति का गठन किया गया। संचालन समिति का स्वामी सुमेधानंद जी को अध्यक्ष बनाया गया और स्वामी आर्यवेश जी को संयोजक। स्वामी जी की अध्यक्षता में अनेक सम्मेलन हुए। यद्यपि चम्बा से दिल्ली आना उनके लिए कष्ट साध्य था परन्तु स्वामी आर्यवेश के कारण उन्होंने कष्टों की परवाह नहीं की और कुशलतापूर्वक सार्वदेशिक सभा का संचालन किया। सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित वेद ग्रन्थ समाप्त हो गए थे और उनके प्रयासों से पुनः वेद प्रकाशित हुए तथा सार्वदेशिक सभा की आर्थिक स्थिति भी ठीक हुई। बाद में स्वास्थ्य के कारण स्वामी जी का दिल्ली आना संभव नहीं रहा और संचालन समिति भंग हो गई और प्रत्येक सार्वदेशिक सभा अलग से काम करने लगी। स्वामी जी महान देशभक्त थे और उनका विचार था कि अब आर्य समाज को राष्ट्रीय एकता और देश रक्षा के कार्यों में जुट जाना चाहिए।

इस देश का उत्थान तभी हो सकता है जब हम वेदानुकूल शासन व्यवस्था स्थापित करें। हमें अब केवल देश के बारे में ही सोचना चाहिए परन्तु यह तभी संभव है जब आर्य समाजों में कलह समाप्त हो और हम संगच्छध्वं संवदध्वं के मंत्र से प्रेरित होकर कार्य करें।

उन्हें विश्वास था कि आर्य समाज जिस दलदल में फंसा हुआ है उसमें से निकालने का सामर्थ्य स्वामी आर्यवेश में हैं। तीन टुकड़ों में बंटी हुई सार्वदेशिक सभा को एक करना और राष्ट्र रक्षा के लिए आर्य जगत् को प्रेरित करना स्वामी जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

यह अंक आर्य वन्दना कोष से प्रकाशित किया गया तथा आगामी अंक आर्य समाज मण्डी के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

गर्भ में रक्षाबन्धन

◆डा. दर्शन लाल आज़ाद

गर्भ में दो जुड़वा बहन–भाई पल रहे थे,
बाहर आने को उनके अरमान मचल रहे थे।
वो सुनहरे भविष्य का इंतजार कर रहे थे,
मम्मी–पापा कुछ और ही विचार कर रहे थे।

बहन

भईया मम्मी पापा का यह कैसा सोचना है,
हम दुनियां में न आयें यह उनकी योजना है।
यह किसी जल्लाद डाक्टर के पास जायेंगे,
हमें तो गर्भ के अंदर ही मरवायेंगे।
सोचा था भईया तेरे लिए उपहार लाऊंगी,
राखी के धागों का मैं पवित्र प्यार लाऊंगी।
अब मैं तेरे लिए राखी लाऊं किस तरह ?
इस पवित्र त्यौहार को मनाऊं किस तरह ?

भाई

प्यार से अपना हाथ मेरी कलाई पर रख दे,
राखी भाव का आशीर्वाद तू भाई पे रख दे।
मैं लाचार हूं बहन तेरी रक्षा नहीं कर सकता,
मां बाप दुश्मन, डाक्टर से लड़ नहीं सकता।
मम्मी पापा करते हमसे ना इन्साफ़ी हैं,
कहते हैं, दो हैं, बस दो ही काफ़ी हैं।
हम दुश्मन हैं इनके, हम इनकी औलाद नहीं,
दादी दादा भी सुन सकते हमारी फरियाद नहीं।

बहन

भईया फिर खुद को हम बचायें किस तरह,
समझ नहीं सकते इन्हें समझायें किस तरह।
मजबूर हैं रो सकते नहीं, चिल्ला सकते नहीं,
अपना दुःख भी किसी को बता सकते नहीं।
मां हमसे जान छुड़ाने की प्रार्थना कर रही है,
हस्पताल से ठीक लोटू यह याचना कर रही है।
मम्मी कहती प्रार्थना सुनता सबकी भगवान है,
हमारी क्यों नहीं सुनता यह कैसा भगवान है ?
पापा समझाते हैं वो हस्पताल आलीशान है,
अल्ट्रासाऊंड, एक्सरे, आप्रेशन थियेटर महान है।
डाक्टर की ऊंची डिग्री सब माडर्न सामान है,
भईया यह हस्पताल ही हमारे लिए शमशान है।
हम अधूरे अरमान लेकर ही यहा मर जायेंगे,
सुन्दर धरती अपनी आंखों से न देख पायेंगे।
रक्षा कर नहीं सकते कैसे रक्षा बन्धन मनायेंगे,
इस हस्पताल में ही हम तो दफ़न हो जायेंगे।
किसी को पता भी नहीं चलेगा हम चले जायेंगे,
लोग हमारा दर्द आज़ाद की कविता में पायेंगे।

गर्भपात का परिणाम

गर्भपात का बुरा परिणाम हो रहा है,
प्रकृति के विरूद्ध यह काम हो रहा है।
समाज व डाक्टरी पेशा बदनाम हो रहा है,
नारी शरीर रोगों का गुलाम हो रहा है।
यह गर्भपात गर्भ के रोगों को बढ़ाता है,
रसौली, कैंसर, टी. वी. का योग बनाता है।
हीनभाव से डिप्रेशन की बीमारी बढ़ रही है,
चिड़चिड़ापन दिमागी टैंशन भारी पड़ रही है।
इनका हल केवल इस गर्भपात को रोको,
गर्भपात के लिए इस बढ़ते हाथ को रोको।
दानव समाज के आज़ाद इस हाथ को रोको,
गर्भपात पाप है मिलकर इस पाप को रोको।

मुख्य संरक्षक	: रोशन लाल बहल, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180–71247
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184–60332
	2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591–05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184–71530
सह–सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला
	2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू मोबाइल : 94599–92215
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

आर्य प्रति. सभा हि.प्र. के अनेक वर्षों तक रहे अध्यक्ष औ , जगत् के मूर्धन्य नेता स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज का ५ अगस्त २०१५ को मध्यरात्रि आकस्मिक निधन हो गया। वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के राष्ट्र अध्यक्ष भी रहे हैं। उनके नेतृत्व में आर्य समाज का उत्थान हुआ उनकी प्रत्येक धड़कन में आर्य समाज की स्वर लहरी जागृत रहती थी। वे दीन दुःखियों और दलितों के मसीहा थे। उनका दुःख दर्द दूर करने में सर्वथा तत्पर रहते थे। वे महर्षि दयानन्द मठ म्बा के संचालक थे। उनके निधन से आर्य जगत् में शून्यता आ गई है। जिसकी पूर्ति दीर्घकाल तक पूरा करना सर्वथा असंभव है। स्वामी जी आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के अनेक वर्षों तक अध्यक्ष रहे। उनके प्रयासों से आर्य समाजों में आये तनावों में कमी आई। वे हर क्षेत्र में अपना कार्य पूरी दक्षता और निष्ठा से निभाते थे। उनके निधन से आर्य जगत् में उत्पन्न हुई कमी को निकट भविष्य में पूरा नही किया जा सकता। लगभग ६ वर्ष स्वामी सुमेधानंद जी महाराज सभा के प्रदेशाध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। उसी वर्ष सभा का दूसरा चुनाव भी हुआ, जिसमें ११० से अधिक सदस्यों ने भाग लिया था, जिसमें सर्व सम्मति से इस सभा का अध्यक्ष मुझे निर्वाचित किया गया। इस प्रकार भारत वर्ष की अन्य सभाओं की तरह हिमाचल की सभा का भी विभाजन हो गया। यह स्वामी जी को अखरा, और उन्होंने मण्डी में हिमाचल के दोनों सभाओं की बैठक बुलाई। विचारों के आदान प्रदान के उपरान्त स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज ने उत्तेजित होकर कहा कि दूसरी सभा के अध्यक्ष हैं वे अपने मुख से कुछ भी नहीं कह रहे हैं, जबकि उन्हें अपने विचार सबके समक्ष रखने चाहिए। स्वामी जी के विचारों का उत्तर देने के लिए मैं खड़ा हुआ और मैंने स्वामी जी से निवेदन किया कि मैं स्पष्ट वक्ता हूँ, मेरी बातों को अन्यथा न समझा जाए, मैंने कहा कि स्वामी जी इस सदन में कोई एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो आपको प्रधान पद पर आसीन होता नहीं देखना चाहता।

लेकिन मैं स्पष्ट बात उगल रहा हूँ, उसे अन्यथा न लिया जाए। मैंने उन्हें कहा, स्वामी जी आपकी सभा कुछ ऐसे व्यक्ति बैठे हैं जिन पर आर्यजनों का विश्वास नहीं है। लेकिन वे आपके कन्धों पर बन्दूक रखकर हमारे विरूद्ध उसका प्रयोग करते हैं। बस मेरा ऐसा कहना ही था कि स्वामी जी का एक नकली हनुमान कह उठा, मैं आपके विरूद्ध हाईकोर्ट में मानहानि का दावा करूंगा। मैंने उससे करवद्ध प्रार्थना की कि मैं आप भले ही उच्चतम न्यायालय में चले जाए, मैं वहाँ भी वही कहूंगा जो मैंने यहाँ कहा। तनावपूर्ण स्थिति को भांपते हुए स्वामी जी महाराज ने सभी को शांत किया और अंत में स्वामी जी महाराज के नेतृत्व में तीन व्यक्तियों की समिति का नये चुनाव करवाने हेतु गठन किया गया जिसमें परम आदरणीय रत्न लाल वैद्य, और मुझे शामिल किया गया। इस प्रकार स्वामी जी के मार्ग दर्शन में ही आगे चलकर दोनों सभाओं का एकीकरण हुआ, जिसमें सर्व सम्मति से स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज प्रधान निर्वाचित हुए। सभी आर्यजनों ने चुनाव का भरपूर स्वागत किया। स्वामी जी के नेतृत्व में ही सभा की एक बैठक ६ वर्ष पूर्व हुई जिसमें स्वामी जी महाराज ने आर्य वन्दना पत्रिका के संचालन की बागडोर मुझे संभाली। मैंने उनसे करवद्ध प्रार्थना की कि मैं इसका स्वस्थ रूप से संचालन नहीं कर पाऊंगा। अतः किसी अन्य आर्यजन को इसका दायित्व सौंपा जाए। स्वामी जी ने मेरी एक भी बात स्वीकार नहीं की और उनकी आज्ञा का पालन करते हुए अनिच्छा से ही पद्भार संभाल लिया। दूसरी ओर स्वामी जी महाराज की ओर से भी भरपूर सहयोग मिलता रहा। सुन्दरनगर में पत्रिका लगातार आठ वर्षों से प्रकाशित हो रही है। आज दिन तक सभी अंक श्री विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक तथा श्री माया राम, प्रबन्ध सम्पादक के मार्ग दर्शन में प्रकाशित होते रहे। आज स्वामी जी के निधन से जो रिक्तता आई है, वह आर्य वन्दना परिवार के लिए महान् क्षति है। मैं समझता हूँ कि पत्रिका का १०० वाँ अंक आपके सहयोग के बिना प्रकाशित कर पाऊँगा। आर्य वन्दना परिवार सदा और सर्वदा स्वामी जी की शिक्षाओं से प्रेरणा ग्रहण करता रहेगा। ईश्वर स्वामी जी की आत्मा को अपनी व्यवस्था में सुखी और आन्नदित रखे। यही हम सभी की प्रार्थना है। एक बार कांगड़ा में महर्षि दयानन्द मठ चम्बा के संचालक स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज ने पंजाब प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार के साथ मंच सांझा किया था। मैं भी वहाँ स्वामी जी के साथ उपस्थित था। पंजाब मैं उन दिनों खालिस्तान के संबंध में जोरदार आंधी चली हुई थी। स्वामी जी ने अपने भाषण में उग्रवादियों को हिंसा का मार्ग छोड़कर अहिंसा की ओर चलने का आवाहन किया। उन्होंने उस समय मुझे याद है कहा था कि बंदूक की गोली से समस्याओं का समाधान नहीं होता। इसके स्थायी समाधान के लिए मीठी बोली व भातृभाव की परम आवश्यकता है। श्री वीरेन्द्र जी ने भी ओजस्वी

भाषण की अमृत वर्षा की। बाद में स्टेज से उतरकर मुझसे कहने लगे कि आर्य जी अब हिमाचल सभा की बागडोर संभाले मैं बलिदान देने पंजाब चला जाऊंगा। आप लोग गृहस्थी हैं मेरा कोई आगा–पीछा चला नहीं है।

मैंने स्वामी जी महाराज से करबद्ध निवेदन किया कि प्रतिदिन आप जनसेवा कर रहे हैं। इससे बड़ा त्याग व बलिदान क्या हो सकता है। अपने सिर को स्वामी जी आपको सुरक्षित रखना ही होगा। क्योंकि हिमाचल में आपके शरीर व सिर की आवश्यकता है। आप ही उचित मार्गदर्शन कर सकते हो। बीच भंवर में नैया को छोड़कर जाना नाविक को शोभा नहीं देता। इस पर स्वामी जी कुछ नहीं बोले। वे वीरेन्द्र जी को पहुँचाने आगे चले गए।

संस्मरण

एक बार स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज मुझे अपने साथ डैहर अनाथालय ले गए। वहाँ अनाथालय को देखकर वे अत्यंत प्रभावित होकर मेरे अनुज व दिव्य मानव ज्योति के अध्यक्ष श्री सत्यप्रकाश व मुझे कहने लगे–सत्यप्रकाश मैं भगवा वस्त्र धारी संन्यासी हूँ। बचपन से ही घर छोड़कर मैंने संन्यास ले किया था। लेकिन संन्यासी होकर भी मैं वहाँ नहीं पहुँच सका। जहाँ दूसरी ओर गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए भी तुमने इस आश्रम को चलाया है। मैं साधु हूँ। इन बच्चों को कुछ नहीं दे सकता। क्योंकि मैं भिक्षा से ही गुजारा करता हूँ। लेकिन मेरी हार्दिक इच्छा है कि आप मेरी ओर से डटकर खीर खिलाए। इसके लिए उन्होंने ५००० रुपये की राशि दी। यदि पैसे की कमी पड़ी तो आप अपनी ओर से दे देना मैं चंबा मठ से भेज दूंगा। लेकिन यह राशि इतनी थी कि बच्चों ने भरपेट खीर को खाया व स्वामी जी का धन्यवाद किया।

एक बार आर्य प्रतिनिधि सभा (हि.प्र.) की विशेष बैठक मेरे घर पर रखी गई थी। यह लगभग १९९२ की बात है। विमल वधावन जी सार्वदेशिक सभा में महामन्त्री इस बैठक में विशेष रूप से भाग लेने पधारे थे। मैंने स्वामी जी महाराज जी से खरीहड़ी मैं आर्य समाज मन्दिर बनाने के लिए लगभग दो बिस्वा जमीन मैंने व सत्यप्रकाश ने अपने ज्येष्ठ भ्राता स्व. रामदित्ता की स्मृति में आर्य समाज के निर्माण की इच्छा प्रकट की व स्वामी जी को जगह बताई। उस जगह बहुत गंदगी पड़ी थी। उसे देखते ही स्वामी जी गद्‌गद् हो गए। उन्होंने मेरी पीठ थप–थपाते हुए कि यह उत्तम प्रस्ताव है। इसे अवश्य सभा में लाओ। हम आज ही इस सम्बन्ध में अंतिम निर्णय ले लेगे। मैं आर्य समाज बनाने हेतु सुन्दरनगर में भूमि प्राप्त करने के लिए परम आदरणीय सत्यप्रकाश जी ने मुझे एक दिन बैठक शुरू होने से पूर्व सुझाव दिया कि हम मिलकर आर्य समाज का निर्माण करते। उनका सुझाव मेरे कानों में कौंध रहा था दूसरी ओर स्वामी जी महाराज ने अपनी स्वीकृति देकर मेरे उत्साह को दोगुना कर दिया। मेरे छोटे भाई सत्यप्रकाश शर्मा जी ने भी आर्य समाज मन्दिर के निर्माण हेतु जगह देने की स्वीकृति दे दी। जब मैंने अपने घर में आयोजित बैठक में उपस्थित जनसमूह में यह प्रस्ताव रखा। तो बिलासपुर के स्वतन्त्रता सेनानी व आर्य समाज बिलासपुर के संस्थापक लाला धर्मदास जी व स्वामी जी ने खड़े होकर अपनी जेब से २५०० रुपये स्वामी जी ने २१०० रुपये लाला धर्मदास ने उसी समय दान रूप में दिए। देखते ही देखते वहाँ पर लगभग २५००० रुपये एकत्रित हो गए। स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज तथा स्वतन्त्रता सेनानी लाला धर्मदास तथा सत्यप्रकाश व अन्य समस्त कार्यकारी सदस्यों के व्यवहार से इतना उत्साहित हुआ कि उसी दिन से आर्य समाज के निर्माण का संकल्प ले लिया। इस हेतु मण्डी आर्य समाज के श्री रोशनलाल वैद्य, श्री रत्नलाल बहल, स्व. श्री जयलाल मल्होत्रा तथा मण्डी कार्यकारिणी सदस्यों का भरपूर सहयोग मिला। मैं इस निमित श्री सत्यप्रिया जो अब साध्वी हैं का ताउम्र आभारी रहूँगा कि उन्होंने अपनी माता जी से भी ५००० रुपये का सहयोग दिलाया। मुझे पूरा भरोसा दिलाया कि आप निश्चित रहो आर्य समाज का भवन बनकर रहेगा। इस सम्बन्ध में स्व. कृष्ण लाल आर्य एवं केदारनाथ का सहयोग भी स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। आर्य समाज के निर्माण के उपरान्त यहाँ के पुस्तकालय का शुभारम्भ स्वामी सुमेधानन्द जी ने अपने करकलमों से किया। लाला धर्मदास व स्वामी जी का आशीर्वाद निरन्तर प्रगति के शिखर पर पहुँचा रहा। कुल्लू आर्य समाज के प्रधान श्री अशोक आनन्द, श्री सत्यप्रकाश भटनागर, वेद मित्र जी आदि सभी कुल्लू समाज के सदस्यों की सेवाएं सराहनीय रहेंगी।

एक बार की बात है कि स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज अपनी दयानन्द मठ चम्बा की कुटिया मैं अपनी मंजिल पर बैठे चिन्तन में डूबे थे। सहसा मैं और परम आदरणीय श्री रोशन लाल शास्त्री जी इनसे मिलने मठ में जा धमके। हमें देखते ही स्वामी जी महाराज हैरान होकर कहने लगे कि आर्य जी आप अचानक ही कैसे आ धमके। ये तो चमत्कार हो गया। शास्त्री व मैंने स्वामी जी का चरण स्पर्श किया व उन्होंने बड़ी आत्मीयता के साथ हमें भोजन करने हेतु कहा। भोजन का समय हो चुका था। स्वामी जी अपने विद्यार्थियों व हम दोनों के साथ भोजन करने बैठे गए। संभवतः चपातियों के साथ दाल व भुजी बना रखी थी। बड़े

प्रेम के साथ स्वामी जी के साथ हमने उसे ग्रहण किया। मैंने उस समय स्वामी जी से करबद्ध प्रार्थना की कि आप उस भोजन के अतिरिक्त अन्य पदार्थ भी खा पी लिया करो। स्वामी जी ने तपाक से कहा कि मेरे गुरू जी मुझे ऐसा ही कहते हैं लेकिन मैं वही भोजन करता हूँ। जो मेरे विद्यार्थी खाते–पीते है। इसी से मुझे शान्ति व ऊर्जा मिलती है। थोड़ी देर बातचीत करने के उपरान्त मैं श्री रोशनलाल शास्त्री जी के साथ वापस आ गया। जहाँ हमारी अध्यापकों की एक बैठक होनी थी। रास्ते में शास्त्री जी ने मुझे बताया कि स्वामी जी के आश्रम में जाकर शांति व परमआनन्द मिला। मैं इसे कभी नहीं भूल पाऊंगा।

एक बार स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज मेरे गृह में स्वामी सुबोधानन्द जी महाराज तथा अन्य महानुभावों के साथ बैठे थे। उस समय स्वामी सुबोधानन्द जी ने स्वामी सुमेधानन्द जी को संबोधित करते हुए कहा–आज मैं आपको एक बहुत बड़ी खुशी की बात सुनाता हूँ। मुझे अपने गाँव में राजपूत सभा का प्रधान सर्वसम्मति से निर्वाचित कर दिया। इस पर स्वामी सुमेधानन्द जी ने कहा–भविष्य में इस तरह की बातें मुझसे न करना मैं चाहता हूँ कि इन आग्नेय वस्त्रों को उतारकर दूसरे वस्त्र पहनें।

स्वामी सुबोधानन्द जी खड़े होकर कहने लगे। ठीक है आज के उपरान्त मैं राजपूत सभा का प्रधान नहीं बनूंगा। जाकर पहली बैठक में अपना त्यागपत्र प्रस्तुत कर दूंगा। सुमेधानन्द जी ने कहा–हम दोनों सर्वानन्द जी के शिष्य है। स्वामी जी ने समाज निर्माण व ऋषि दयानन्द के विचारों के प्रचार–प्रसार के लिए बहुत कार्य किया। हमें ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए। जिससे आर्य समाज के सिद्धांत को क्षति पहुँचे। स्वामी सुमेधानन्द जी ने केवल मात्र यह कहा कि भविष्य में सोच समझ कर कार्य करूंगा। स्वामी सुमेधानन्द जी गुरू भाई के विचारों से संतुष्ट हो गए।

स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के सम्बन्ध में मैं इतना ही कहूँगा कि वे कोहिनूर हीरे की तरह अपनी चमक व दमक का प्रकाश समाज में फैलाते रहे और समाज में फैली कुरीतियों, कुनितियों, भ्रष्टाचार के समक्ष कभी भी किसी भी परिस्थिति में घुटने नहीं टेके। वे दीन दुःखियों असहायों के आंसू पोंछते थे। यथा शक्ति समाज निर्माण हेतु सहयोग देते। आज स्वामी जी महाराज का नश्वर शरीर नहीं रहा। लेकिन उनकी धवल कीर्ति सदा उनकी गाथा गाती रहेगी व हमें प्रेरणा देती रहेगी। प्रमात्मा की व्यस्था में आनन्द में रहे। अगले सुखमय जीवन की कामना करते हैं। यही हमारी प्रभु चरणों में इच्छा है।

–कृष्ण चन्द आर्य

श्रद्धा का महासावन
शिव पूजा से विश्व कल्याण

♦योगगुरू बाबा रामदेव पतंजलि योगपीठ

सावन में शिव के साकार और निराकार दोनों स्वरूपों की पूजा होती है। जो भक्त भोलेनाथ के निराकार स्वरूप का गंगाजल से अभिषेक करते हैं, उनकी जीवात्मा को अमरत्व प्राप्त होता है। उनके नाम स्मरण व उच्चारण में इतनी शक्ति है कि बम–बम भोले और बोल बम के नारे लगाने वालों में अदम्य साहस और अक्षय शक्ति का समावेश हो जाता है। उनके नाम स्मरण मात्र से ही अपंग, वृद्ध व बाल रूप में भक्त भी सैंकड़ों किमी. की यात्रा करने में सक्षम हो जाते है। संसार में सर्वाधिक संख्या शिव मदिरों की ही है। वे सभी देवी–देवताओं के आराध्य हैं और श्री हरि के अवतारों ने भी उनकी पूजा की है। भगवान शिव की बारात विश्व की सबसे अद्भुत बारात थी। भगवान शिव की बारात में असुरगण, देवता, ऋषि, अवधूत, फक्कड़ और सामान्य प्राणी से लेकर देवर्षि एवं ब्रह्मा, विष्णु सभी शामिल थे। इतनी बड़ी और अद्भुत बारात सम्पूर्ण ब्रह्मांड में आज तक किसी की नहीं हुई। भगवान शंकर मात्र जलाभिषेक करने मात्र से ही भक्तों का कल्याण करते हैं। भगवान को भांग, धतूरा, इत्र, दूध–दही, शहद आदि भेंट कर मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। भगवान शिव ही सृष्टि के पालनहार व रक्षक हैं। भगवान शंकर के अनेक रूप और अनेक नाम हैं। भगवान शंकर के महारुद्राभिषेक व शिवोपासना करने से विश्व का कल्याण होता है। श्रावण मास में भगवान शंकर दक्षेश्वर महादेव बनकर कनखल दक्षनगरी में विराजमान रहते हैं।

आर्य समाज बनाम स्वामी रामदेव

♦इन्द्रजित्देव, चूना भट्टियां, यमुनानगर (हरियाणा)

स्वामी रामदेव, योग गुरू का एक वक्तव्य "शिवपूजा से विश्व कल्याण" शीर्षक से दैनिक जागरण के देहरादून संस्करण में दिनांक १० अगस्त २०१५ को पृ ८ पर छपा है। इसमें पौराणिक विधारधारा का स्पष्ट प्रचार किया गया है। आर्य समाज, महर्षि दयानन्द व आचार्य बलदेव के स्वयं को शिष्य कहलाने वाले कितने पौराणिक बन गए हैं इस वक्तव्य से सहज ही समझा जा सकता है। उनका यह वक्तव्य पठनीय है, उन आर्यों के लिए जिन्होंने उन्हें महर्षि दयानन्द तथा वैदिक धर्म के लिए ही समर्पित समझा था। मूल प्रकाशित वक्तव्य भी प्रकाशित किया जा रहा है।

स्वामी जी से अनुरोध है कि वे "सत्यार्थ प्रकाश" के प्रथम समुल्लास में वर्णित वैदिक शिव अर्थात् परमपिता परमेश्वर की बजाए किसी शरीरधारी एवं धतूरे व भांग आदि को पसन्द करने वाले शिव नामक व्यक्ति की उपासना करने का उपदेश न करें।

श्री कृष्ण

♦कृष्ण चन्द आर्य

गांधारी के स्वयंवर के समय पितामह भीष्म दौड़े–दौड़े सभास्थल पर पहुँचे और उन्होंने गांधार नरेश को ललकारते हुए कहा कि आज तक आपके समस्त कन्याओं का विवाह हस्तिनापुर के राजघराने से होता रहा। फिर हस्तिनापुर नरेश को आमन्त्रण न भेजकर आपने हमारा अपमान किया है। मैं अपनी माता श्री सत्यवती के आदेशानुसार आपकी बेटी को अपने महाराज की महारानी बनाने हेतु आया हूँ। गांधार नरेश भीष्म की हठधर्मी पर जोश के आवेग में आ गए। गांधारी यह सब देख रही थी, पितामह भीष्म ने गर्जते हुए गांधार नरेश को कहा कि अभी अपनी बेटी को मेरे साथ रवाना कर दो। रवाना करके विवाह मंडप को शमशान भूमि होने से बचा लो। उन्होंने गांधारी को अपने साथ चलने का आदेश दिया। जिसे उसने स्वीकार कर लिया। अनेकों राजाओं महाराजाओं को मृत्यु का आलिंगन करने से पूर्व उन्हें बचा लिया। वह जानती थी कि पितामह भीष्म से दो–दो हाथ करने का किसी राजा महाराज का साहस नहीं था। उसने चलने में ही सभी का हित समझा राजघराने पहुँचकर भीष्म पितामह ने गांधारी धृतराष्ट्र को सौंप दी। गांधारी ने भी अपनी आंखों में पट्टी बांध ली। जो भीष्म के लिए एक और दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी। पितामह चाहते थे कि गांधारी महाराज धृतराष्ट्र की आँखें बनकर राजपट का संचालन करे। लेकिन उसने तो अपने पति के पद चिन्हों पर चलकर आयुपर्यन्त आँखों में पट्टी बाँधने का निर्णय कर लिया। यह गांधारी के आँखों में पट्टी बांधने के गलत निर्णय का कुप्रभाव था कि उसके सभी १०० पुत्र दासियों की देखरेख में बड़े हुए। उन्हें अपने माता–पिता का वास्तविक प्यार व वात्सल्य नहीं मिल पाया। उनका ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन पथभ्रष्ट हो गया। वह समस्त राज्य को ही अपने पास रखना चाहता था। किसी भी परिस्थिति में वह कृष्ण के अनुरोध पर भी पांडवों को पाँच गाँव तक देने को तैयार नहीं हुआ। उसने केवल मात्र यह कहा–सुचाग्रे न दास्या बिना युद्धे केशव अर्थात् बिना युद्ध किए मैं सुई के नोक के बराबर भूमि भी नहीं दूंगा। अन्तिम वार्ता भी असफल होने पर श्री कृष्ण ने युद्धकाल देते हुए कर्ण को कहा–बुयाकर्ण इति गत्वा द्रोण भीष्मम् नवम् कृयम् अर्थात हे कर्ण अब द्रोणाचार्य, पितामह भीष्म, कृपाचार्य आदि सभी विभुतियों को जाकर कह दो कि अब कुरूक्षेत्र के मैदान में अमावस्या के दिन से हम अपने भाग्य का निर्णय करने आएंगे। गांधारी यह सब जानते हुए विवश थी कुछ भी कहने को उसका पुत्र महान हठी, अत्याचारी, लोभी, दंभी बन चुका था। जिसे शकुनि, कर्ण कदम–कदम पर उकसाते रहते थे। दुर्योधन की हठधर्मता व धृतराष्ट्र का पुत्रमोह महाभारत के युद्ध का सबसे बड़ा कारण सिद्ध हुआ। पितामह भीष्म व द्रोणाचार्य के तीर दुर्योधन की जबान खामोश करने को पर्याप्त थे। मगर महाराजा धृतराष्ट्र का पुत्रमोह उन्हें ऐसा करने से रोकता रहा। जिससे सारा देश युद्ध की विभिषिका में लहुलुहान हो गया। धृतराष्ट्र के पुत्रमोह ने विशेष भूमिका निभाई व पितामह भीष्म सरकारी आदेश के बिना शक्ति होते हुए कुछ नहीं कर पा रहे थे। पितामह भीष्म के वाणों को धृतराष्ट्र के पुत्रमोह का ग्रहण लग गया था। वे सर्वथा लाचार थे। कोई भी आदेश देने में अपने को असमर्थ समझ रहे थे। पितामह भीष्म अपनी माता सत्यवती के आदेशों का कुलरक्षा के लिए पालन नहीं कर पा रहे थे। अतः वे अपने को लाचार समझकर परिस्थितियों से समझौता करने के लिए बाधित थे। किसी कवि ने ठीक ही कहा :–

वाह भीष्म का इन्द्रिय दमन उनके धरा सी धीरता आह
एक जन के अनुकरण में सब जनों की अनुकरणता महाभारत के

युद्ध का सबसे बड़ा कारण पर प्रकाश डालते गुप्त जी कहते हैं।

युद्धिष्ठिर क्या हुताशान सहसा फूटता है क्या निर्धन
व्योम से अनुनगीर छूटता है। अनुनगीर फूटता है तब ताप
होता पृथ्वी में कड़कती दामिनि विकराल धूमाकूल गगन में।
श्री भीष्म पितामह सच्चे पक्के विभूति थे।

परोपकार की भावना मन व मस्तिष्क में होने से व्यक्ति संपूर्ण कार्य फलीभूत होते हैं। ऐसी कुछ विभूतियाँ होती हैं जिनका अपने से अधिक लगाव चाह दूसरों से होता है। मैं अपने बचपन की एक छोटी सी कहानी उद्धृत कर रहा है। जिसे ये पता लगता है कि हमारे ग्राम के निवासी भी लोकोपकार कभी भी किसी भी परिस्थिति में किसी से कम नहीं रहे हैं। छोटी आयु में ही मेरे अनुज जो आजकल डैहर अनाथालय के अध्यक्ष हैं रात्रि में बहुत उल्टियाँ हुई। गुड़ मिश्रित मिष्ठान जो ग्रहण किया था सब उतर गया। मेरे माता जी मुझे वीणा नामक गाँव में अपने साथ ले गई। अपने जीवन काल में मेरे पिता श्री उन गांवों तक पैदल यात्रा करके वैद्य का कार्य करते थे। मेरी माता ने जिस ढंग से अपने नन्हें बालक की दुःखद कहानी ग्राम निवासी लटोरिया राम की सुनाई तो उसने कहा कि हमारे पास गउएं हैं। बाहर बांधी हुई एक लाल गाय की तरफ इशारा करते हुए उसकी पीठ पर हाथ रखकर लटोरिया राम जी बोले इस गाय को अपने घर ले जाओ। यह आपके परिवार को दूध की कमी नहीं आने देगी। जब इसका दूध समाप्त हो जाए तो इसे लाकर यहीं खूंटी से बांध देना। मैं हैरान था कि श्री लटोरिया राम की करूणामयी क्रिया की प्रतिक्रिया परिवार के अन्य सदस्यों पर न पड़े। लेकिन वे घर

के बड़े सर्वमान्य व्यक्ति थे दूध, घी की कमी उनके घर में न थी। मेरी माता ने गाय की रस्सी मेरे हाथ में दी लटोरिया राम ने मक्की की एक रोटी खिलाकर विदा किया। घर पहुँचकर इस गाय ने लम्बे समय तक पूरे परिवार की सेवा की। अपने दूध से हमें कृत–कृत किया।

एक दिन मैं अपनी धर्मपत्नी सहित नगारडा ग्राम में प्रीतिभोज हेतु गया। वापसी पर हम दोनों स्वर्गीय श्री लटोरिया राम की विधवा से मिलने खड्ड पार करके चले गए। मैना अभी घर पर ही बैठी थी। उसने हम दोनों के पैर पकड़े और भावविभोर होकर रोना शुरू कर दिया। मैं हैरान था कि आखिर अचानक इनके रोने का क्या कारण था। मैंने उनसे पूछ ही लिया। तो वह भावुक होकर कह उठी कि मेरी बेटी पढ़ने में अति उत्तम थी लेकिन जिस युवक से उसकी सगाई हुई। उसने इसका पाठशाला जाना बंद करा दिया। हमारे ऊपर विपत्ति का पहाड़ तब पड़ा जब उस युवक ने दूसरी पढ़ी लिखी युवती से शादी कर ली। हमारी बालिका का भविष्य धूमिल कर दिया। मेरे दिमाग में उनकी व्यथा को दूर करने का विचार कौंधने लगा। समीपवर्ती चुरढ़ ग्राम में एक ब्रेस्तु राम आचार्य जी थे, जो यदा–कदा अपनी शादी के सम्बंध में मुझसे चर्चा करते रहते थे। मैंने श्री ब्रेस्तु राम शास्त्री को स्कूटर में बिठाकर दूसरे दिन मैना जी के पास दस्तक दी। वह पुनः आने कारण समझ नहीं पा रही थी। लेकिन मैंने श्री ब्रेस्तु राम की स्वीकृति लेकर उसकी उस परिवार में रिश्ता करने की बात की। जब मैना जी व उसके पंचायत प्रधान पुत्र श्री चेतराम को बात बताई। तो वे मेरे प्रस्ताव को सुनकर स्तब्ध हो गए। मैना जी के सिर से मानो क्विंटल बोझ उतर गया। उसने मुझसे कहा कि बताओ टीप कब व कहाँ मिलाई जाए। मैंने उनसे कहा कि मैं ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज में विश्वास करता हूँ। श्री ब्रेस्तु राम जी भी जो यहाँ बैठे हैं मेरी बातों का समर्थन करेंगे। क्योंकि वे आर्यसमाज रीति निती से परिचित हैं। स्व. श्री लटोरिया राम की विधवा मैना जी बोली यह तो संभव नहीं कि बिना कुंडली मिलाए शादी की जाए। समीप बैठे उनके पुत्र चेतराम ने कड़कते हुए कि माँ तुझे क्या हो गया। जो गुरू जी कह रहे है वह अक्षरशः सत्य है उनकी बातों पर न नहीं करनी चाहिए। फिर मैना ने शादी का दिन निकालने की बात कहीं। तो मैंने तुरन्त उत्तर दिया कि ३–४ दिन उपरान्त हम आर्यसमाज मन्दिर में उनकी शादी कर देंगे। तो मैना जी बोली कि इतनी शीघ्रता में हम देहेज कैसे इकट्ठा कर पाएंगे। मैंने उनसे प्रार्थना कि दहेज रूपी एक पैसा भी नहीं लिया जाएगा। अपने घर मैं सभी को रीति निती से भोजन करा देना उस महिला ने मेरे पैरों को हाथों से जकड़ लिया। अश्रुधारा में सींचि रही। वह बोला कि आप मेरे लिए परमेश्वर का दूसरा रूप हैं। मैंने उससे कहा कि आपके पतिदेव ने जो हमारे परिवार को विपत्ति के समय सहारा दिया वह भुलाने पर भी नहीं भुलाया जा सकता। रविवार के दिन प्रातःकाल ही वर व वधु पक्ष के व्यक्ति मेरे गृह मैं एकत्रित हुए। हम दोनों पक्षों को अल्पाहार कराकर आर्यसमाज मन्दिर ले गए। जहाँ वैदिक मंत्रों से विधि विधान पूर्वक शादी संपन्न कराई। दूसरे दिन ब्रेस्तु राम ने अपने घर गाँववासियों के लिए प्रीतिभोज का आयोजन किया। आज उनका गृहस्थ जीवन सुख शांति से भरपूर है। उनकी एक बेटी अध्यापन का कार्य करती है बेटा आयुर्वेदिक डाक्टर है। दोनों बड़ी दक्षता से माता–पिता की आज्ञा का पालन करते हैं। इसके सफल, शांति संतुष्ट गृहस्थ परिवार को देखकर मन खुश होता है।

इस सम्बंध में मुझे यह कहते हुए बड़ा अचंभा हुआ जब मैंने स्व. श्री लटोरिया राम की बेटी जो मेरी शिष्या रही है, दोनों छोटे बच्चों को खच्चरें चराते देखा। मैंने यह बात अपने अनुज दिव्य मानव ज्योति अनाथालय के अध्यक्ष सत्यप्रकाश से कही। इन दोनों बच्चों को अनाथालय में भरती करने हेतु कहा। अध्यक्ष जी कड़कते हुए बोले कि हमने ठेकेदारी नहीं ली है। लोग शराब पीते रहे व बच्चों को अनाथालय भेजें मैंने श्री लटोरिया राम व उनकी लाल गाय की याद कराई। जिसने छोटे बच्चों को दूध पिलाकर रक्षा की। मैंने अध्यक्ष जी से कहा कि आज श्री लटोरिया राम जी सदा व सर्वदा के लिए इस संसार को छोड़कर चले गए है। निश्चित है कि हमारे जीवन का सूर्य भी एक दिन अस्त हो जाएगा। लेकिन जाने से पूर्व आपके हमारे परिवार पर जो ऋण है कम से कम इस बहाने हम चुका पाने का प्रयास करेंगे। मेरे भाई को मेरी बातों में कुछ सार नज़र आया। उसने लटोरिया राम के दोनों दोहतों व कृष्णा के बेटों को आश्रम में दाखिला दिया। आज वे दोनों बालक बाहरवीं करने के बाद अपने जीवन की गाड़ी को आगे बढ़ा रहे हैं। अध्यक्ष अनाथालय के समस्त कर्मचारियों के सदप्रयत्नों को कैसे भुला सकते हैं। जो आयुपर्यन्त उनके हृदय पटल पर अंकित हो चुका है।

सुविचार

"संसार एक सुन्दर गीत है, प्रत्येक वस्तु यहाँ पर गाती है। आकाश की आँख में तारे गाते हैं। उद्यानों की झीलों में फूल गाते हैं। समुद्र के सीने पर तरंगें गाती हैं। जीवन के किनारे पर मृत्यु गाती है। मृत्यु के उस पार नवजीवन है। हर वस्तु गा रही है, फिर मनुष्य ही पत्थर बनकर क्यों बैठा रहे ? क्यों न वह प्रसन्नता से झूम उठे ? क्यों न उसके ठहाकों से पृथ्वी एवं आकाश गूँज उठें ?"

भगवान बचाये, इन मौत के सौदागरों से

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

मिलावट करना घोर अपराध है। यह जानते हुए भी मिलावट करने वाले सक्रिय रहते हैं। वे पकड़े भी जाते हैं। उन्हें सजा भी होती है। परन्तु जल्दी धनी बनने के चक्र में इस कार्य से बाज़ नहीं आते मिलावट का कुकृत्य मानवता के विरूद्ध भीषण अपराध है। मिलावटी वस्तुएं खाने से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव होता है। उपभोक्ता रोग ग्रस्त हो सकते हैं। परन्तु मिलावट करने वाला लालच के कारण यह कार्य छोड़ते नहीं। उनकी अन्तर आत्म उन्हें झंझोड़ती नहीं। उन्हें पैसे के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता। दूध अमृत तुल्य वस्तु है जिसका पान हम स्वस्थ रहने के लिये करते हैं। शिशु की रक्षा तथा स्वास्थ्य के लिये माँ के दूध के पश्चात् गाय के दूध पिलाया जाता है। परन्तु बाजार के दूध का पता नहीं चलता कि नकली है या असली। आप भी जान लीजिये नकली दूध तथा मावा कैसे बनता है और ऐसी वस्तु खाकर आप कितने स्वस्थ रहेंगे। नकली दूध कास्टिक सोड़ा, यूरिया तथा रिफाईंड आयल मिलाने से बनता है। इस दूध के सेवन से अपच और पेट में ऐंठन जैसे रोग उत्पन्न होते हैं। कब्ज के साथ टाईफाईट अलसर, पीलिया तथा अन्य पेट के रोग हो जाते हैं। यह बच्चों के लिये अति हानिकारक है। इस दूध में मलाई क्रीम लाने के लिये अरारोट का पाऊडर मिलाया जाता है। इस दूध का स्वाद असली के समान होता है। यदि दूध भली प्रकार सफेद न हो तो रंग उज्ज्वल करने के लिये सफेद सियाही डाली जाती है। सियाही का अर्थ कालिमा होता है। परन्तु यह श्वेत करने का रंग होता है। इस दूध का मावा (खोया) बनाने और खोया से मिठाईयाँ बनाने के लिये दूध में सियाही चूस कागज तथा उबले आलु पीस कर डाले जाते हैं। ऐसी मिठाई खाने से गैस, पेट फूलना, उल्टी, दस्त और अपच जैसे रोग प्रायः हो जाते हैं। पित बढ़ जाता है, जिससे पीलिया हो जाता है। जी मचलना, भूख न लगना आदि से भी जूझना पड़ता है। डाक्टर रोग के लक्षण देख औषधि देगा तथा उपचार करेगा परन्तु यह उपभोक्ता ने स्वयं देखना है कि वह क्या खा रहा है। कई बार हमें मिठाई उपहार में मिलती है। उपहार की वस्तु की कौन जाँच परख करता है। यदि करें तो यह अशिष्टता मानी जायेगी। वैसे भी दान की गाय के दांत कौन देखता है।

परन्तु कहा गया है, ईलाज से परहेज़ बेहतर। बचाव में ही बचाव होता है। सावधानी तो हम रख सकते हैं। यह देखना हमारा कार्य है और सावधानी में चूक नहीं होनी चाहिये।

सरकार ने निश्चित कर रखा है कि मिलावटी माल बाजार में न बिके। इसके लिये स्वास्थ्य अधिकारी हर जिला में होता है जो वस्तु की शुद्धता देखने के लिये सैम्पल भर कर प्रयोगशाला में भेज सकता है। सैम्पल यदि फैल हो जाये तो न्यायालय द्वारा दण्ड दिया जाता है। भ्रष्ट व्यापारी इसका पहले प्रबन्ध कर लेता है। वह स्वास्थ्य अधिकारी के सम्पर्क में रहता है। समय–समय पर उसे उपहार भेजता है। उन्हें मासिक राशि इसलिये भेजता है कि नकली माल का सैम्पल न भरा जाये। यदि भरा जाये तो उसकी रिपोर्ट नेगेटिव (नकारात्मक) न आये और सैम्पल पास हो जाये। वह राजनैतिक सम्बन्धों का सहारा भी लेता है। कहने का तात्पर्य यह है कि मिलावट तब तक नहीं रूक सकती जब तक इसे रोकने के लिये नियुक्त अधिकारी ईमानदार और दृढ़ निश्चय वाले न हों। जो राजनैतिक हस्ताक्षेप के सामने भी न झुकें। एक बार एक अधिकारी ने साहस दिखा एक व्यक्ति के विरूद्ध पग उठाया। जो किसी मन्त्री का सम्बन्धी था। मेरे सामने उस अधिकारी को ऐसा करने पर फटकार लगाई गई। पहले पिसी हल्दी प्रायः अमृतसर (पंजाब) से आती थी माल पुड़ियों में बन्द होता था। हल्दी का सैम्पल भरा गया और फेल हो गया। अभियोग चला। फौजदारी मुकदमा था। हर पैशी पर उपस्थित होना पड़ता था। दुकानदार ने ब्यान दिये कि माल अमृतसर वाले व्यापारी ने ऐसा ही भेजा था परन्तु अमृतसर के व्यापारी ने कहा कि पुड़ियों वाला कागज उसका है परन्तु हल्दी जो उसने भेजी थी वह नहीं है। विचारा छोटा दुकानदार अपराधी न होते हुए भी अपराधी माना गया और उसे सज़ा हुई। सारा कारोबार चौपट हो गया। इन उदाहरणों से हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जब तक भ्रष्ट लोग हैं, मिलावट समाप्त नहीं हो सकती। अधिकतर अपराधिक वृति के लोग मिलावट में लगे हैं। इनकी मानसिकता ऐसी हो जाती है जो उन्हें जुर्म करने के लिये बार–बार उकसाती है। इंगलैंड की रानी लड्डी मेरी के समय जेब कतरों को पकड़े जाने पर गहरे गढ़ों में डाल दिया जाता था। फिर खूंखार कुत्ते उन पर छोड़ दिये जाते थे जो उन्हें नोचते थे। विचारे तड़पते और चिल्लाते थे। बड़ा क्रूर दृश्य होता था जिसे देखने के लिये बड़ी भीड़ इकट्ठा होती थी। परन्तु दूसरे जेबकतरे भीड़ की जेबें काटने में लगे होते थे।

इसी प्रकार एक अच्छा पैंटर चरस की तस्करी के कारण जेल में सज़ा काट कर आया। सभी ने उसे पैंटर का कार्य गम्भीरता से करने की सलाह दी और उसे शपथ दिलाई कि वह तस्करी का कार्य नहीं करेगा। परन्तु एक दिन सभी देखकर हैरान रह गये कि वह चरस तस्करी में फिर पकड़ा गया है। पूछने पर उसका उत्तर था, पैंटर कार्य से अधिक से अधिक ४००/– रूपये प्रतिदिन मिलते हैं परन्तु चरस की एक तस्करी से चालीस हज़ार, तो बताओ लाभ का काम क्यों न करूं ?

आर्य समाज में पाखण्ड और अन्ध विश्वास पसर रहे हैं

♦इन्द्रजित्देव, चूना भट्ठियां, सिटी सैंटर के नजदीक, यमुनानगर (हरियाणा)

सन् १९६४ ई. में शास्त्रार्थ महारथी व वैदिक धर्म के सुयोग्य प्रवक्ता स्व. पं. बिहारीलाल शास्त्री जी का एक सुलेख "सार्वदेशिक" दिल्ली के एक अङ्क में प्रकाशित हुआ था। इसका प्रकाशन हमारे उपरोक्त शीर्षक से मिलते–जुलते शीर्षक "आर्यसमाज में भी अन्धविश्वास पनपने लगा से हुआ था। इसमें श्री पं. बिहारी लाल जी ने आर्यों को सावधान करते हुए लिखा था कि योग व यज्ञ के नाम पर चल रहे मिथ्या विश्वासों को पनपने ही न दें।

तब से अब तक गंगा व यमुना में बहुत जल बह चुका है। पेड़ों से कितने ही पुष्प झड़ गये हैं तथा कितने ही नये फूल उग आये हैं। बहुत परिवर्तन हो गये हैं परन्तु पं. जी के समय से आर्यसमाज में आरम्भ हुए विश्वास व पाखण्ड बहुत गहराई से पसर रहे हैं। न कोई धर्मार्थ सभा के निर्णयों की मानता है, न ही विभिन्न गोष्ठियों में पारित हुये प्रस्तावों की **क्रियात्मक रूप देने को तैयार है। कुछ विद्वान् तो ऐसे भी देखने में आ रहे हैं, जो इन प्रस्तावों पर हुई चर्चाओं में उपस्थित रहकर शुद्ध सैद्धान्तिक पक्ष के समर्थक रहे हैं परन्तु बाद में यदि किसी आर्य समाज ने उन्हें अपने उत्सव में आमन्त्रित करके सिद्धांतों व विद्वत् गोष्ठियों में लिये गये** निर्णयों के विपरीत कुछ कार्य कराना चाहा है, तो उन्होंने भी कर दिया है। हमारा यह कथन बहुकुण्डीय यज्ञ के विषय में विशेषतः लागू होता है।

सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा ने अपनी २० जनवरी, २००० की बैठक में प्रस्ताव संख्या २ के माध्यम से यह निर्णय लिया था कि बहुकुण्डीय यज्ञ शास्त्रसम्मत नहीं है। ये बन्द होने चाहिये। ४ अगस्त से ११ अगस्त, १९९६ तक आर्यसमाज, जनकपुरी, सी–३ पार्क, दिल्ली में उन्नीस विद्वानों की गम्भीर चर्चा हुई थी व अन्य कई विषयों के अतिरिक्त बहुकुण्डीय यज्ञ का विषय भी विचारार्थ रखा गया था। सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया था कि शास्त्रीय व वैदिक प्रमाण न मिलने के कारण यह यज्ञ अशास्त्रीय व अवैदिक है। इसी प्रकार की लगभग ५० विद्वानों की एक गोष्ठी ३ दिनों तक नवम्बर, २००५ ई. में कुरूक्षेत्र में आयोजित हुई थी। इसमें भी उपरोक्त निर्णय का ही समर्थन किया गया था परन्तु १६ जनवरी, २००६ ई. को कुरूक्षेत्र में ही मेरठ जिला के एक संन्यासी के ब्रह्मत्व में बहुकुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया था।

इस यज्ञ का आयोजन एक "वैदिक यज्ञ अनुसंधान संस्थान" की ओर से किया गया। इस 'संस्थान' ने यत्र–तत्र कई ऐसे यज्ञ कराये हैं। इसके पास न तो कोई अनुसंधानशाला है, न ही कोई अनुसन्धानकर्त्ता है। न किसी यज्ञ से पूर्व पिछले यज्ञ के परिणाम ही बताए गये है। फिर भी इसका नाम "वैदिक यज्ञ अनुसंधान संस्थान" है। यज्ञ से पूर्व इसे ऐतिहासिक व अद्वितीय यज्ञ घोषित किया गया। यह घोषणा भी झूठी सिद्ध हुई कि इसमें एक लाख याज्ञिक यज्ञ करेंगे। कुछ कुण्डों में अग्नि जल रही थी, कुछ कुण्डों से धुआं उठ रहा था तथा कुछ कुण्ड याज्ञिकों की प्रतिक्षा में ही पड़े रह गये। यह हमारा स्वयं का देखा है। ब्रह्मा जी ने संवादाताओं से प्रार्थना की कि जिन कुण्डों से धुआं उठ रहा है, उनके चित्र न लिये जायें। एक व्यक्ति ने कुल कुण्डों की संख्या ली व उसने बताया कि कुल कुण्ड २,००० थे। इस विवरण से स्पष्ट होता है कि यह यज्ञ कैसा यज्ञ था व इसमें कितने झूठ व छल–कपट का आश्रय लिया गया।

कई लोग अन्यत्र भी बहुकुण्डीय यज्ञों का आयोजन कर **रहे हैं। थोड़े अन्तर के साथ लगभग यही दृश्य व स्थिति आप वहाँ भी देख सकते हैं। यह तर्क दिया जाता है कि एक ही समय में आर्यसमाज के कार्यक्रम में अनेक गैर आर्य भी यदि यज्ञ करना सीखते हैं व आर्यसमाज के विचारों को सुनते हैं तो इसमें हर्ज ही क्या है?** हमारा निवेदन है कि जिन्होंने कभी यज्ञ नहीं किया, उन्हें घण्टा भर में आप यज्ञ करना सिखा ही नहीं सकते। आर्यसमाज में यज्ञ करने वालों में से एक भी व्यक्ति ने केवल एक–दो घंटों में एक बार यज्ञ करके या देखकर यज्ञ करना सीखा ही नहीं। एक बार यज्ञ में बैठने वाला व्यक्ति तो यह नहीं जान पाता कि आचमन दाएं हाथ से करना है अथवा बायें हाथ से। ठीक प्रकार से अंग–स्पर्श करना भी प्रथम बार में नहीं सीखा जाता है। पहली बार यजमान व्यक्ति को चाहे सोने के भी हवन–कुण्ड व यज्ञपात्र घर में ले जाकर यज्ञ करने हेतु आप दे दें तो भी वह हवन स्वयं नहीं कर पायेगा। गैर आर्यसमाजी भी हवन करते हुए यदि बहुकुण्डीय यज्ञ में आयेंगे तो आर्यसमाज के प्रति उनकी श्रद्धा बढ़ेगी, इस तर्क का सविनय उत्तर यह है कि ऐसे यज्ञों के बाद कहीं भी आर्यसमाजों के साप्ताहिक या अन्य सत्संगों में नये लोग आये हैं, ऐसा देखने में नहीं आया। यदि आप उन्हें यज्ञ व आर्यसमाज में सच्चे हृदय से लाना चाहते हैं तो हवन प्रशिक्षण के लिये शिविर लगाइए, उसमें हवन करने की आवश्यकता व इसके लाभ समझाइए। इस शिविर में हवन की सभी प्रक्रियाओं व मंत्रों के अर्थ बताइए, जैसा कि दर्शनयोग महाविद्यालय, रोजड़ (गुजरात) के आचार्य ज्ञानेश्वर जी, हैदराबाद के आचार्य वेदभूषण जी तथा कुछ अन्य

विद्वान् करते हैं। यह कार्य निःशुल्क करिये–कराइये। इस प्रकार आप की भावना का सच्चा प्रमाण मिलेगा तथा हवन का सही प्रचार व प्रशिक्षण होगा। जिस प्रकार के बहुकुण्डीय यज्ञ चल पड़े हैं, उनसे आयोजकों व ब्रह्मा जी को आर्थिक लाभ भले ही हो जाए, अन्य किसी को किसी प्रकार का भी लाभ नहीं हुआ, न ही हो सकता है। विपरीत इसके हम यह कहने की धृष्टता करे बिना नहीं रहेंगे कि ऐसे हवनों से हानि ही होती है व पाप कर्मों को ही बढ़ावा मिलता है।

बहुकुण्डीय यज्ञों में याज्ञिक ब्रह्मा जी से दूर–दूर तक बैठते हैं। ब्रह्मा जी को ऐसी 'दिव्यदृ' प्राप्त नहीं होती जिससे वे अपने आसन पर बैठे–बैठे यह जान लें कि दूर–दूर तक बैठे सभी यजमानों ने अग्निहोत्र की किसी क्रिया को कर लिया है अथवा नहीं किया। न ही ब्रह्मा जी यह जान पाते हैं कि अग्निहोत्र की किस क्रिया को किस यजमान ने ठीक किया है या गल्त किया है। इस प्रकार की जानकारी के अभाव में यदि अग्निहोत्र आगे चलाया जाता है तो बड़ा दोषी ब्रह्मा जी के अतिरिक्त अन्य कोई न होगा क्योंकि जिसके अधिकार अधिक होते हैं, कर्त्तव्य भी उसी के अधिक होते हैं–यह एक सहज स्वाभाविक सिद्धांत है। ऐसे यज्ञ पूर्ण अनुशासन व पूर्ण प्रक्रियाओं सहित सम्पन्न हो ही नहीं पाते। पारस्कर गृहसूत्र के हरिहर भाष्य के अनुसार "जहाँ यज्ञ अव्यवस्थित, अवैज्ञानिक व अनुशासनहीन विधि से होते हैं, वहाँ भूख, प्यास, क्रोध के वशीभूत होकर तथा मन्त्रहीन तथा अग्नि के अच्छी प्रकार न जलने पर अथवा धुआँ निकलते रहने पर जो व्यक्ति हवन करता है, वह अन्य जन्म में अन्धता को प्राप्त होता है।" जिन भद्रपुरुषों को आर्यसमाजों से घटती उपस्थिति पर चिन्ता है, उन्हें यदि सच्चे अर्थों में उपस्थिति बढ़ानें की तड़प है तो पूर्ववत् आर्यसमाजों में सेवा कार्यों को आरम्भ करें; हवन–प्रशिक्षण–शिविर आयोजित करें; विधर्मियों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारें; अपने व्यक्तिगत व सामाजिक पारिवारक जीवन में सत्यता व स्वाध्याय की स्थापना करें; बलिदान व त्याग के ऊँचे उदाहरण प्रस्तुत करें; अर्थशुचिता व निस्वार्थता के आदर्श को साकार करके दिखायें; अपने राष्ट्र के सम्मुख मुँह बाए खड़ी विभिन्न समास्याओं के सार्थक व क्रियात्मक समाधान देने की व्यवस्था करें; शिक्षा, राजनीति, धर्म व युवाओं से सम्बन्धित अनसुलझे प्रश्नों के उपयोगी उत्तर देने के लिये ठोस कार्यक्रम पेश करें। इन क्षेत्रों में, इन विषयों में कार्य करने के लिये आज कोई आर्यसमाजी तैयार नहीं है और सम्पूर्ण शक्ति बहुकुण्डीय यज्ञ करने में लगाई जा रही है। ऐसा करके यह विश्वास पालते हैं कि हमारे सत्सगों में श्रोताओं की संख्या बढ़ेगी। पिछले अनुभवों से यह सिद्ध हो चुका है कि ऐसे यज्ञों के बाद श्रोताओं की संख्या बढ़ी नहीं है।

एक तर्क यह दिया जाता है कि महर्षि दयानन्द जी ने "संस्कार विधिः" में जिस शाला कर्म विधिः की व्यवस्था की है, उसमें पाँच वेदियाँ बनाने व उनमें आहुतियाँ देने का आदेश दिया है तो इससे सिद्ध है कि वे भी बहुकुण्डीय यज्ञों के समर्थक थे। ऐसे तर्क देने वाले यह बात क्यों भूल जाते हैं कि "शालाकर्म विधिः" में यजमान तो एक ही रहता है तथा पाँचों वेदियों में न तो एक ही समय आहुतियाँ दी जाती हैं तथा न ही एक ही प्रकार के से सभी वेदियों में आहुतियाँ दी जाती हैं; जबकि बहुकुण्डीय यज्ञ में एक समय एक ही मन्त्र से अनेक वेदियों में अनेक यजमान आहुतियाँ देते हैं।

इस विषय में अनेक शास्त्रीय प्रमाण भी हमारे पक्ष का समर्थन करते हैं।

ऋत्विग्वरण करते समय यजमानोक्ति इस प्रकार है : 'अहमद्य..... कर्म करणाय भवन्तंवृणे' अर्थात् मैं इस समय..... कर्म कराने हेतु आपका वरण करता हूँ।

आचमन मन्त्र इस प्रकार हैं :–

'ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' अर्थात् हे रक्षक स्वरूप भगवन्! तू बिछौने के समान है। मैं यह यथार्थ रूप में जानता मानता हूँ।

"ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' अर्थात् हे रक्षक स्वरूप भगवन्! तू बिछौने के समान है। मैं यह यथार्थ रूप में जानता मानता हूँ।

'ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा' अर्थात् हे रक्षक अमृतस्वरूप भगवन्! आप ओढ़ने के समान हो। मैं यथार्थ रूप में जानता–मानता हूँ।

'ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयताम स्वाहा' अर्थात् हे रक्षक भगवन्! सत्य से प्राप्त किया यश, श्री, धनसम्पत्ति–ऐश्वर्य मुझे प्रदान करो। इन चारों मन्त्रों में एक वचन में ही सारा कथन है, बहुवचन में नहीं। इससे सिद्ध है कि यजमान एक ही होना चाहिये।

यज्ञ के अन्त में जो आशीर्वाद दिया जाता है, उसमें भी एकवचन का ही प्रयोग है: ओं! सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।

–यजुर्वेद १२/४४

अर्थात् हे ईश्वर! यजमान की सभी शुभ कामनायें पूर्ण होवें। इससे भी सिद्ध होता है कि यजमान एक ही होना चाहिये। कुछ ब्रह्मा यज्ञ में एक से अधिक यजमानों को बैठाकर यजमानानों (द्विवचन) अथवा यजमानानां (बहुवचन) बोल देते हैं–यजमानस्य (एक वचन) के स्थान पर, परन्तु ईश्वर

के बनाये वेद के मूलमन्त्र में परिवर्तन करने का अधिकार किसी यज्ञ के ब्रह्मा तो क्या किसी ऋषि को भी नहीं है।

अग्न्याधान मन्त्र बोलते समय भी एक ही यजमान होना सिद्ध है :–

तस्यास्ते पृथिवि देवयनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यादधे।

–यजुर्वेद ३/५

अर्थात् यह भूमि, हे भगवन्! यह पृथिवी जो देवों का यज्ञस्थान है, मैं इसकी पीठ पर खाने योग्य अन्न की प्राप्ति हेतु ..... खाने वाली भौतिक अग्नि को स्थापित करता हूँ।

वेदी में अग्नि स्थापित करने के पश्चात् अग्नि को प्रदीप्त करते समय जो मन्त्र बोला जाता है, वह इस प्रकार है :–

अस्मिनसधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत

–यजुर्वेद १५/५४

अर्थात् हे विद्वत्जनों व यजमान! तुम सब इस यज्ञदेश में उचित व उत्तम स्थान पर बैठो। इससे सिद्ध है कि एक यज्ञशाला में विद्वान् तो एक से अधिक होंगे परन्तु यजमान एक ही होगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा "संस्कार विधिः" के सामान्य प्रकरण में लिखे निम्नलिखित शब्दों पर भी ध्यान दें :–

"सब संस्कारों में मधुर स्वर से मन्त्रोच्चारण यजमान ही करे। न शीघ्र, न विलम्ब से उच्चारण करे किन्तु मध्यभाग जैसा कि जिस वेदका उच्चारण है, करे। यदि यजमान न पढ़ा हो तो इतने मन्त्र तो अवश्य पढ़ लेवे।" इस शब्दावलि में कई बार एक ही यजमान के होने का स्पष्ट प्रमाण मिलता है।

ऋग्वेद १०/१०१/१ मन्त्र में भी एक ही यज्ञाग्नि को प्रज्वलित करने का आदेश है :–

उद्बुध्य ध्वम् समनसः सरवायः समग्निमिन्ध्वं बहवः सनीड़ा। अर्थात् हे समान ख्याति वाले मित्रो! जागृत तथा समान मनवाले सनीड़ अर्थात् एक स्थान पर मिलकर एक ही यज्ञाग्नि को प्रज्वलित करो।

यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण वैदिक प्रमाण बहुकुण्डीय यज्ञ के विरोध में है। इसका तात्पर्य यह है कि जैसे परिवार में सब सदस्य एक यज्ञाग्नि (=हवन कुण्ड) में ही आहुति देते हैं, वैसे ही सामूहिक, वर्ग, समुदाय अथवा समाज रूप में भी मिलकर एक ही यज्ञाग्नि में आहुतियाँ दें।

इस संक्षिप्त विवेचन से स्पष्ट है कि व्यवहारिक तथा शास्त्रीय, दोनों दृष्टियों से बहुकुण्डीय यज्ञ अनुचित व अवैदिक हैं। आर्यों को वेद व महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट यज्ञ परम्परा का निर्वाह करना चाहिये, न कि पोपलीला का प्रचार करने का पाप करना चाहिये।

''आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी के चुनाव''

आर्यसमाज सुन्दरनगर कालौनी (हि.प्र.) के चुनाव दिनांक २६ जुलाई २०१५ को श्री दर्शन मेहन के अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। इनमें श्री रामफल सिंह आर्य जी को सर्वसम्मत्ति से प्रधान चुना गया और शेष कार्यकारिणी के गठन का भी अधिकार दिया गया। आर्य समाज की कार्यकारिणी का गठन उन्होंने इस प्रकार से किया : सर्वश्री

वरिष्ठ उप प्रधान	– दर्शन मेहन
मन्त्री	– सत्यप्रकाश शर्मा
उप–मन्त्री एवं अधिष्ठाता	– श्रवण कुमार आर्य
आर्य वीर दल	
कोषाध्यक्ष	– राजेश रावल
पुस्तकालयाध्यक्ष	– शमशेर सिंह
भण्डार अध्यक्ष	– बलदेव सिंह रंगा
लेखा निरीक्षक	– राजेन्द्र लोहान

अन्तरंग सदस्य : नरेश काम्बोज, पवन, बसन्त सिंह, महावीर सिंह गिल, श्रीमती सुनीता मेहन, रानी आर्या, सुदेश आर्या, अलका रावल।

–रामफल सिंह आर्य, प्रधान आर्यसमाज, सुन्दरनगर कालौनी (हि.प्र.)

अबके, तबके

♦महात्मा आनन्द स्वामी

एक था राजा। एक बार अपने मन्त्रियों को कहा उसने, "दो 'अबके' लाओ, "दो तबके' लाओ और दो ऐसे जो न अबके हों न तबके।" बहुत–से–मन्त्री आश्चर्यचकित हुए कि यह माँग क्या है ? यह 'अबके' और 'तबके' क्या हुआ ? कौन उनकी खोज करे ? कहाँ से लायें राजा के पास ? परन्तु एक मन्त्री था समझदार; उसने कहा, "महाराज! मैं लाता हूँ।" और वह दो राजाओं को ले आया, दो साधुओं को, दो साधारण व्यक्तियों को। उन्हें सामने करके उसने कहा, "महाराज! ये राजा लोग अबके हैं। इन्होंने पिछले जन्म में पुण्य किया था और अब उस पुण्य को भोग रहे हैं। ये दो तपस्वी साधु हैं। ये अबके नहीं, तबके हैं। आज ये पुण्य के मार्ग पर चलते हुए तप करते हैं और आगे जाकर ये इसका फल भोगेंगे। ये दो साधारण व्यक्ति हैं, इन्होंने न पिछले जन्म में कोई बड़ा पुण्य किया, न अब कर रहे हैं, ये अबके हैं न तबके हैं।"

साधारणतया हम सब लोग न 'अबके' होते हैं न 'तबके'। ऐसा बनने का लाभ क्या है ?

मिसाइल मैन

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

पूर्व राष्ट्रपति अवुल पाकिर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम एक ऐसे मुस्लिम थे जिनके एक कान में कुरान और दूसरे कान में गीता के श्लोक गूंजते थे। मिसाइल मैन डॉ. अब्दुल कलाम हमारे देश के लिए एक उदाहरण बन कर विदा हुए ऐसी आत्माऐं मरती नहीं अमर हो जाती हैं उनके अमूल्य विचारों से लगता है–जैसे वे आज भी हमारे बीच विद्यमान हैं। उनके चरित्र की विनम्रता और उनके सपने भारत वर्ष की आने वाली पीढ़ियों का हमेशा मार्गदर्शन करते रहेंगे। डॉ. कलाम आधुनिक युग के महात्मा थे। उनका जीवन दर्शन, सादगी और कार्य लम्बे समय तक आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी। आप कबीर का नया अवतार थे, कबीर ने धर्म और समाज को समझा किन्तु डॉ. कलाम ने धर्म, समाज और विज्ञान को समझा और समझाया। उन्हें सरल, सहज व्यक्तित्व और अविवादित राष्ट्रपति के रूप में याद किया जाना चाहिए। डॉ. कलाम ने अनेक, पुस्तकें लिखीं जिन में 'टर्निंग प्वाईंट' नामक पुस्तक में कलाम ने भारत के ११ वें राष्ट्रपति बनने तक की घटनाओं का उल्लेख किया है। तत्कालीन प्रधान मन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने मुझे फोन कर अपने पास बुलाया और कहा "आपके लिए हमारे पास एक महत्वपूर्ण समाचार है। मैं अभी अभी सहयोगी पार्टियों के नेताओं की एक विशेष बैठक में भाग ले कर आ रहा हूँ। हमने सर्वसम्मति से फैसला लिया है कि देश को राष्ट्रपति के रूप में आपकी आवश्यकता है। मैं इस बात की घोषणा आज रात कर दूंगा। मैं आपकी सहमति चाहता हूँ। वाजेपयी जी ने ज़ोर देकर कहा–मुझे केवल हाँ सुनने की आदत है, न की नहीं।"

इस बातचीत के उपरान्त मैंने अपने सिविल सर्विस और राजनीति के मित्रों को ३० फोन कर उनकी राय जाननी चाही। एक विचार यह आया कि मैं अपना शैक्षणिक जीवन आनंद से व्यतीत कर रहा हूँ जो मेरा जुनून है, मुझे इसे अस्त–व्यस्त नहीं करना चाहिए। दूसरा विचार यह था कि यह मेरे लिए स्वर्णिम अवसर है कि मैं भारत २०२० विजन को राष्ट्र और संसद के समक्ष रख सकूं तथा मुझे यह अवसर खोना नहीं चाहिए। ठीक दो घंटे के उपरान्त मैंने वाजपेयी जी से बात की और अपनी स्वीकृति प्रदान करते हुए कहा–"प्रधानमंत्री जी मैं इसे बहुत महत्वपूर्ण मिशन समझता हूँ और मैं सभी पार्टियों का प्रत्याशी बनना पसन्द करूंगा।" वाजपेयी जी ने धन्यवाद प्रदान करते हुए इस बात को मान लिया।

अपनी स्वीकृति प्रदान करते हुए अगले १५ मिनट के भीतर राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी के रूप में मेरे चयन का समाचार देश भर में फैल गया। मुझे फोन पर बधाईयों का तांता लग गया। मेरी सुरक्षा बढ़ा दी गई और बहुत से लोग मेरे कमरे में एकत्र हो गए।

१९८१ में पद्मभूषण, १९९० में 'पद्मविभूषण' और १९९७ में सबसे बड़े नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित कलाम २५ जुलाई २००२ को देश के ११ वें राष्ट्रपति बने। भारत के एकमात्र ऐसे राष्ट्रपति जो एक ब्रीफकेस के साथ राष्ट्रपति भवन में प्रविष्ट हुए और कार्यकाल समाप्त होने पर उसी ब्रीफकेस के साथ विदा हुए। डॉ. कलाम आजीवन अविवाहित रहे। डॉ कलाम का जीवन संघर्षों से भरा रहा। तमिल मुस्लिम परिवार में १५ अक्तूबर, १९३१ को जन्मे कलाम के पिता एक नाविक थे और माँ गृहिणी। रामेश्वरम् के प्राइवेट स्कूल में पढ़ते थे लेकिन अपना जेब खर्च चलाने के लिए साइकिल पर अखबार बांटते थे। १९५४ में युनिवर्सिटी ऑफ मद्रास से भौतिकी में एयरोस्पेस में इंजीनियरिंग की। १९६२ में इंडियन स्पेस रिसर्च आर्गेनाइजेशन (इसरो) पहुँचे और यहीं से प्रारम्भ हुआ कलाम के कमाल का सिलसिला। त्रिशूल, पृथ्वी, आकाश, नाग, अग्नि जैसी अचूक मिसाइल देश को दीं। रूस के साथ ब्रह्मोस मिसाइल बनाई। १९९८ में अब्दुल कलाम की देख–रेख में पोखरन में दूसरा सफल परमाणु परीक्षण हुआ।

डॉ. कलाम की सर्वोत्तम पाँच पुस्तकें हैं जो उनकी दूरगामी सोच को प्रकट करती हैं। 'विंग्स ऑफ फायर' (आत्मकथा) इस पुस्तक में कलाम की जीवन यात्रा का वर्णन है। यह किताब देश के रक्षा तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बनने की कहानी भी वर्णित है। जब वे राष्ट्रपति बने तो अमूल के संस्थापक डॉ. वार्गीज कुरियन के कहने पर अपना वेतन एक ट्रस्ट जो ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाएँ उपलब्ध कराती है को दान में देते रहे। वे सुधारवाद के पक्षधर रहे। राष्ट्रपति पद से कार्यमुक्त होने के बाद भी डॉ. कलाम शोध, लेखन, शिक्षण में व्यस्त रहे। आज हम ऐसी महान् विभूति को श्रद्धांजलि दे रहे हैं जो एक बुद्धिमान वैज्ञानिक था, निष्ठावान देशभक्त था और प्रवृति से अध्यापक था। राष्ट्रपति पद से सेवा मुक्त होने के अगले ही दिन से कक्षा में उपस्थित होकर अध्यापन कार्य प्रारम्भ कर दिया। आज समाज में शिक्षक की भूमिका को नगण्य माना जाता है किन्तु डॉ. कलाम को अध्यापक होने में प्रसन्नता का अनुभव होता था और अध्यापन में गर्व। डॉ. कलाम भारतीय हिन्दू–मुस्लिमों के हीरो थे। बहुत दूर की गहरी सोच के धनी ८३ वर्षीय कलाम छात्रों को पढ़ाते पढ़ाते अलविदा कह गए, बताओ अधूरा पाठ कौन पूरा करेगा ?

''वेदोक्त ईश्वर की मान्यता''

♦अभिमन्यु कुमार खुल्लर, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर (म० प्र०)

महर्षि दयानन्द इस रोग से मुक्त थे कि विदेश में जाकर धर्म प्रचार से उनकी अन्तर्राष्ट्रीय छवि बनेगी। अन्तर्राष्ट्रीय छवि बनने के इस लाभ की कल्पना को उन्होंने अपने पास भी नहीं फटकने दिया कि वह भारत में और अधिक पूजनीय बन जावेंगे। वे इस रोग से भी मुक्त थे कि अंग्रेजी जानकर, उसमें पर्याप्त भाषण कला का निखार कर, जनसाधारण ही नहीं भारत के बौद्धिक जगत् में भी उनकी धाक जम जाएगी।

पूजनीय बनने व बौद्धिक जगत् में धाक जमाने का लालच उन्हें स्पर्श भी नहीं कर पाया था। तत्कालीन सन्त समाज प्रमुख स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती (वाराणसी) ने कहा था कि दयानन्द! तुम मूर्ति पूजा का विरोध छोड़ दो, हम तुम्हें विष्णु का अवतार घोषित कर, भारत भर में पूजनीय बनवा देंगे। महर्षि 'नकटा सम्प्रदाय' में शामिल होने को तैयार नहीं हुए। नकटा सम्प्रदाय का अभिप्राय समझने के लिये महर्षि के लिये महर्षि का जीवन चरित्र पढ़ने का कष्ट करें। ब्रह्मसमाज के प्रमुख नेता आचार्य केशवचन्द्र ने महर्षि से कहा–काश! आप अंग्रेजी जानते और मेरे साथ इंग्लैंड चलते। आशय उपरोक्त उद्देश्यों के अतिरिक्त क्या हो सकता है ? महर्षि ने उत्तर दिया–काश, आप अपनी भाषा में प्रवचन करते तो ज्यादा जनता को समझ में आता पर आप तो उस भाषा (अंग्रेज़ी) में प्रवचन करते हैं जो देश की जनता समझती ही नहीं। सुविज्ञ पाठक जानते हैं कि महर्षि अंग्रेज़ी का अभ्यास कर रहे थे। बम्बई प्रवास में वह प्रतिदिन अंग्रेज़ी अखबार सुनते थे। उनका अंग्रेज़ी का अभ्यास मैक्समूलर जैसे विदेशी विद्वानों को यही वेदार्थ समझाने के अतिरिक्त और क्या हो सकता था, जिन्हें वेदार्थ पद्धति का भ्रमित ज्ञान था–महीधर और सायण आदि भाष्यकारों की कृपा से। भारत का चतुर्दिक, सम्यक् विकास उनका प्रथम और अंतिम लक्ष्य था। जैसे जैसे वह प्रचार कार्यक्रम में धंसते चले गये उनका इस लक्ष्य प्राप्ति के लिये आग्रह और प्रबल होता चला गया। यहाँ तक कि व्यक्तिगत मोक्ष, जिसके लिये उन्होंने गृह त्याग किया था, को भी तिलांजलि दे दी थी। इतना तो लेख की भूमिका समझ लीजिए। बैताल की तरह महर्षि कन्धे पर, मन–मस्तिष्क पर सवार रहते हैं। लेख कहाँ से प्रारम्भ करने का मन बनाया था, पर हुआ महर्षि से, यही होना था और यही हुआ भी।

पाँच–छः महीने पूर्व एक वेद मंत्र दृष्टि में आया था। उसके बाद ध्यान से उत्तर गया। संस्कृत पढ़ी नहीं है पर विद्वानों की हिन्दी में व्याख्याएं पढ़ लेता हूँ। कुछ दिनों से उसे ढूँढ़ने का प्रयास कर रहा था, पर सफलता नहीं मिली। श्रद्धेय शिवनारायण उपाध्याय जी (कोटा) को समस्या बताई। उन्होंने वेदमंत्र ही नहीं, उस पर एक लेख लिख कर भेज दिया। मेरे मस्तिष्क में यह बात बार–बार कौंध जाती थी कि इस मंत्र के जानकार होते हुए भी पौराणिक विद्वान् किस तरह विभिन्न ईश्वरों के निर्माण करने में संलग्न रहे और आज भी हैं। नए ईश्वर गढ़ो, उनके पूजन–अर्चन से प्राप्त लाभों की मार्केटिंग करने के लिये सेल्समैन लगा दो। हलवे–मांडे की दीर्घकालीन व्यवस्था सुनिश्चित है। वैष्णोदेवी, गायत्री माता, शिरड़ी के साँई बाबा, पुट्टपार्थी के साँईबाबा भगवान सब यही तो हैं। ज्यादा कठिन, गूढ़ संस्कृत नहीं है इसलिये मैं मंत्र को प्रस्तुत करता हूँ :–

यत एतं देवमेकवृतं वेद। १३.४.१५
न द्वितीयो, न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते। १३.४.१६
न पन्नचमों न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते। १३.४.१८
ना अष्टमों न नवमो दशमो नाप्युच्यते। १३.४.१८

मुझ जैसे केवल हिन्दी जानने वालों के मानसिक प्रवाह को बनाए रखने के लिये मैंने प्रत्येक मंत्र के अंतिम पद यत एतं वेदमेकवृतं वेद का लोपकर दिया है।

श्रद्धेय उपाध्याय जी के अर्थ को यथावत् रखता हूँ। वह अकेला वर्तमान न दूसरा, न तीसरा व चौथा कहा जाता है। वह न पाँचवां न छठां, न सातवां कहा जाता है। वह न आठवां, न नवां, न दसवां ही कहा जाता है। एक से लेकर दस तक की गिनती में समस्त संख्याऐं सम्मिलित हो गई। एक से दस तक मस्तिष्क पर हथौड़ा मार–मार कर वेद कह रहा है कि वह एक ही है। क्या अब भी समझ में नहीं आता कि ईश्वर केवल एक ही है। इतने शक्तिशाली ढंग से ईश्वर के एकत्व का महिमा मण्डन कौनसा धर्म करता है–इस्लाम् ? वहाँ तो रसूललिल्लाह मोहम्मद पैगम्बर जुड़े हुए हैं उनको पारकर, बायपास कर सीधे अल्लाह के पास नहीं पहुँचा जा सकता। ईसाईयत ? वहाँ ईसा मसीह के माध्यम से ही पहुँच है। इनकी हमें इतनी ज्यादा चिन्ता नहीं, जितनी भारत में हजारों और नित नए जन्म लेकर परमात्माओं की संख्या वृद्धि करने वालों की है। समस्त भारतीयों को भी हाल ही में मालूम पड़ गया कि बंगला देश में प्रख्यात् 'ढाकेश्वरी' मंदिर है, अब देखना धार्मिक यात्राओं का प्रवाह प्रारम्भ हो जायेगा। यहाँ के मंदिरों, कब्रगाहों से जिनको लाभ नहीं हुआ वे ''ढाकेश्वरी'' मन्दिर जाएंगे ही।

महर्षि ने दिल्ली सरकार के समय एक धार्मिक दरबार भी लगाया था। समस्त उपस्थित धर्माचार्यों से प्रबल आग्रह किया था कि धर्म के मूल सिद्धांतों पर जिनमें मतभेद नहीं है,

हम एक धर्म स्वीकार कर लें। विरोधी तत्वों को भविष्य में समाधान के लिये छोड़ दें तो देशोन्नति का मार्ग प्रशस्त हो जावेगा। यह नहीं हुआ, होना भी नहीं था। क्योंकि एक वेदोक्त ईश्वर की मान्यता होने से उनके फूस के महल ढ़ह जाते। आचार्य केशवचन्द सेन ने तो विफलता का ठीकरा ही महर्षि के सिर पर फोड़ दिया। महर्षि वेद को अपौरूषेय मानना छोड़ दें तो वे तैयार हैं। महर्षि ने तो देश की एकता के लिये सुदृढ़ आधार रखने के लिये जिन तीन तत्वों का उल्लेख किया है, उनमें धर्म सबसे प्रथम है। देश उनके समय भी पूर्णतया धार्मिक था और आज भी है। कौन धार्मिक एकता के लिये प्रयत्न करे ?

पौराणिक विद्वान्, साधु संत, मठाधीश, क्या भूलकर भी चाहेंगे कि तिरूपति बालाजी के भगवान्, शिरड़ी के सांईबाबा वाले, पुट्पार्थी के सांई बाबा वाले भगवान, सोमनाथ जी, द्वारिकाजी, पुरी, उज्जैन वाले भगवान सब मिलकर एक निराकार, सर्वशक्तिमान भगवान में समा जावें ? बिल्कुल असंभव ? मुझे आगामी सैकड़ों–हजारों वर्षों तक संभव नहीं दिखता। इनकी जड़ों में मठा डालने वाला दयानंद तो १८८३ में ५६ वर्ष की आयु में ही चला गया। पहिला दयानंद महर्षि जैमिनी के पश्चात् छः हजार वर्ष बाद आया था। दूसरा दयानन्द प्रभु कब भेजेगा ? भेजेगा भी या नहीं, कुछ पता नहीं।

''आर्य जगत के सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी समुेधानन्द जी (चम्बा हि.प्र.) का निधन''

♦रामफल सिंह आर्य, महामन्त्री आर्य प्रति सभा (हि.प्र.)

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी का निधन दिनांक ५ अगस्त २०१५ को रात्रि को लगभग १० बजे के समय हो गया। इस समय वे चम्बा मठ में ही थे। स्वामी जी लम्बे समय से बीमार चल रहे थे। सन्त शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के शिष्य स्वामी समुेधानन्द जी अपने गुरू की आज्ञानुसार दयानन्द मठ चम्बा (हि.प्र.) में गये और वहाँ पर बड़ा कार्य किया। दयानन्द मठ चम्बा की स्थापना स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने की भी और इसके संचालन का दायित्व स्वामी सुव्रतानन्द जी को सौंपा परन्तु रोगी होने के कारण स्वामी सुव्रतानन्द जी थोड़े समय के उपरान्त ही वहाँ से वापस लौट आये। उसके उपरान्त स्वामी स्वात्मानन्द जी को भेजा गया। उन्होंने कुछ काल वहाँ पर रहकर संस्कृत पाठशाला का कार्य किया और आर्यसमाजों को भी संगठित करने का प्रयास किया परन्तु ये भी वहाँ पर अधिक देर तक न ठहर सके। इसके उपरान्त स्वामी जी ने स्वामी सुमेधानन्द जी को (जो पहले ब्रह्मचारी गोपाल के नाम से दयानन्द मठ दीनानगर में रहते थे।) चम्बा मठ में भेजा। लगभग १९७५–७६ ई. में चम्बा मठ में आये और कर्मशील एवं योग्य होने के कारण शीघ्र ही मठ के कार्य का बहुत विस्तार किया। संस्कृत पाठशाला को सुचारू रूप से चलाया, आयुर्वैदिक फार्मेसी का कार्य फूला फला और इसके साथ–साथ प्रचार का कार्य, समाजोपकार के कार्य, आर्य समाजों को संगठित करने का कार्य, सभा का कार्य, सभी में रूचि लेकर बहुत कार्य किया। शीघ्र ही इनके तप व त्याग की ख्याति चहुं ओर फैल गई और लोगों ने भी उन्हें भरपूर सहयोग दिया।

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने भी अपने गुरूवर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के स्वभावानुसार ही कई मठों की स्थापना की और अब उनके शिष्य स्वामी सदानन्द जी भी वेद प्रचार प्रसार हेतु कई स्थानों पर यह कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में चम्बा मठ के माध्यम से आर्यसमाज, वैदिक विचारधारा का जो कार्य हुआ वह अपने आप में एक उपलब्धि है। स्वामी सुमेधानन्द जी से मेरा सम्पर्क बहुत समय तक रहा। उनमें सेवा भाव बहुत अधिक था, समय पालन में वे बहुत पक्के थे, यज्ञ के बहुत प्रेमी थे सरलता एवं सहृदयता की प्रतिमूर्ति थे। आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्षों तक प्रधान रहे और उनके साथ कार्य करके बड़ा आनन्द आता था। उनकी हार्दिक इच्छा होती थी कि आर्यसमाजी संगठित कार्य करें। चम्बा मठ के उत्सव पर कई बार जाने का अवसर मिला। उस समय चम्बा की जनता के दिल में स्वामी जी के प्रति जो श्रद्धा एवं आदरभाव था, वह उनके कठिन त्याग व सेवा का ही प्रतिफल था। चरित्र के धनी इस संन्यासी के हमारे मध्य से चले जाने पर एक रिक्तता आई है जिसकी पूर्ति भविष्य में होना संभव नहीं है। आर्यों से निवेदन है कि वे उनके अधूरे कार्यों को उनकी इच्छा के अनुसार पूर्ण करने का व्रत लें। यही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रश्नोत्तर

ईश्वर का आनन्द कैसे प्राप्त होता है ?

इसका विधान कुछ ऐसा है कि जैसे स्विच आन करने पर हमारे घरों के बल्ब जल उठते हैं वैसे ही उपासना में ईश्वर से सम्पर्क व कनेक्शन लग जाने अर्थात् ध्यान में स्थिरता व निरन्तरता आ जाने पर उसका आनन्द हमारी आत्मा में प्रवाहित होने से हमारे दुःख व क्लेश दूर होकर हम आनन्द से भरपूर हो जाते हैं। सिद्ध योगियों को यह आनन्द मिलता है। योग में आंशिक सफलता मिलने पर भी कम मात्रा से यह आनन्द प्राप्ति का क्रम आरम्भ हो जाता है। योगी जितना आगे बढ़ता है उतना ही अधिक आनन्द उसको प्राप्त होता है।

–सौजन्य : आर्य जगत्

शंका समाधान

♦स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका प्राणी मात्र को कर्म के अनुसार दुःख मिलना लिखा ही है तो फिर उनको दुःख भोगने देना चाहिए। तो शास्त्रों में क्यों लिखा है कि प्राणी–मात्र की सेवा, सहायता करनी चाहिए ? समाधान–इसका उत्तर है :–

♦कल्पना करो कि अपने कर्मानुसार हम भी कहीं दुःख में फँस गए, तब हम क्या चाहेंगे ? तब हम यही चाहेंगे कि दूसरा व्यक्ति हमारी सहायता कर दे, हम भले ही दुःख में फँस गए। जब हम चाहेंगे कि दूसरा व्यक्ति हमारी सहायता करे, तो हमको भी दूसरे की सहायता करनी चाहिए। हम भी अपने कर्मानुसार दुःख में फंसेंगे, वो भी अपने कर्मानुसार दुःख में फंसा है।

♦जैसा व्यहार हम दूसरों से अपने लिए चाहते हैं, वैसा ही हमें दूसरों के साथ करना चाहिए। यह धर्म की बात है, मनुष्यता की बात है। इसलिए हमें दूसरों की सहायता करनी चाहिए।

♦ईश्वर ने उसके कर्मानुसार उसको दुःख दिया। किसी को विकलांग बना दिया, किसी को रोगी बना दिया। कर्म के अनुसार दुःख देना, यह ईश्वर का काम है। ईश्वर ने अपना काम किया।

जिस ईश्वर ने व्यक्ति को कर्मानुसार दुःख दिया, उसी ईश्वर ने हमको यह सुझाव दिया कि, भई इस रोगी की, इस मुसीबत के मारे की सहायता करना। ईश्वर के आदेश का पालन करना हमारा धर्म है। इसलिये कोई दुःख में फंस जाए, आपत्ति में फंस जाए, तो उसकी सेवा–सहायता जरूर करनी चाहिए।

♦ईश्वर के दंड विधान में बाधा उत्पन्न करना तब होता, जब ईश्वर मना कर देता कि रोगी की सहायता मत करो। और फिर भी हम ऐसा करते। यह उसके काम में दखलंदाजी होती। पर जब ईश्वर स्वयं ही कह रहा है कि, "तुम इसकी सहायता करो।" इसलिए उसके काम में हमने गड़बड़ नहीं की, बल्कि उसके आदेश का पालन किया। अपराधी को दंड देना ईश्वर का काम है और दंड मिलने के बाद उसकी सहायता करना हमारा काम है। क्योंकि यह काम हमको ईश्वर ने बताया है। ऐसा करने में कोई आपत्ति नहीं है।

♦और एक बात जो खास समझने की है कि–जो भी दुःख हमें प्राप्त होते हैं, वे सब हमारे कर्मों का फल नहीं हैं। कुछ दुःख हमारे कर्मों का फल हैं, कुछ अन्याय से भी हमको भोगने पड़ते हैं। दूसरे व्यक्तियों या प्राणियों के द्वारा अन्याय हो सकता है। प्राकृतिक दुर्घटनाओं से भी हमको दुःख भोगने पड़ते हैं। अतः सहायता करना कोई अपराध नहीं है।

मामा भानजा और वो

♦प्रो. अर्चना आर्या, प्रधान आर्य समाज, खरीहड़ी

इतिहास के पन्नों में योगीराज श्री कृष्ण और उनके मामा कंस जो अत्यन्त अत्याचारी अभिमानी और स्वछन्द शासक था, कौन नहीं जानते। यह श्री कृष्ण ही थे जिन्होंने अपने अत्याचारी अन्धविश्वासी और महापापी दुष्ट मामा का संहार करके कारागार की सलाखाओं में बन्द राजाओं को मुक्त कराया तथा माता देवकी और पिता वासुदेव को ससम्मान मुक्त किया। मथुरा निवासी श्री कृष्ण के इस निर्णय से गदगद हुए। कंस का संहार और स्वजनों का रक्षा का दायित्व निभा कर उन्होंने अति सराहनीय कार्य किया जो इतिहास के पन्नों में सदा अंकित रहेगा अत्याचारी कंस कृष्ण के मामा थे जिन्होंने अपनी बहन देवकी तथा बहनोई वासुदेव को करागार में बन्द कर रखा था। वह नहीं जानता था कि उसका अन्त निकट है और मौत की छाया उस पर मंडरा रही है और कभी भी उसके आभिमान का मृत्यु के क्रूर हाथों द्वारा कृष्ण के माध्यम से समाप्त किया जायगा। मथुरा में चारों ओर कंसकी मृत्यु पर हर्ष व्यक्त किया गया जो सभी शांतिप्रिय लोगों के लिए सुखद समाचार था। इतिहास में श्री कृष्ण और कंस शकुनि और दुर्योधन के नाम मामा–भानजा के सम्बन्ध में प्रचारित होते रहे हैं। लेकिन हम अपने मामा का नाम लेकर उसकी उपमा चन्दा मामा से करते हैं जो शीलता का परिचायक है। कंस की दुष्टता और शकुनि की धृष्टता के कारण एक महान् युद्ध हुआ जिसके भंयकर परिणामों को विश्व की जनता ने अपने ह्रदय पर पत्थर रखकर कहा श्री कृष्ण के न चाहते हुए भी युद्ध के बादल गरजे और भीषण नरसंहार हुआ। भीम की गदा और द्रोण के तीरों ने व अन्य राजाओं ने भंयकर नरसंहार किया जिसके स्मरण मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। महाभारत की तीसरी शक्ति के रूप में दानवीर कर्ण की जीवनगाथा अत्यन्त प्रेरणामयी है जिसने कृष्ण के शान्तिमय प्रस्ताव को अस्वीकार करके दुर्योधन का साथ देना न छोड़ा। खून की अंतिम बूंद तक अपने मित्र के साथ वफादारी निभाई। कृष्ण और कर्ण महाभारत में ऐसे पात्र थे जिन्होंने जन्म से मृत्यु पर्यन्त महान कष्टों को सहा अपने जीवन को सार्थक बनाया।

गायत्री मन्त्र

♦कवीन्द्र रविन्द्रनाथ ठाकुर

"भारत वर्ष को जगानेवाला यह मन्त्र इतना सरल है कि एक श्वास में इसका उच्चारण किया जा सकता है। भूर्भुवः स्वः कहते हुए तीनों लोकों अर्थात् सारे जगत् को मन में इक्ट्ठा करके लाना चाहिए कि मैं किसी देश–विदेश का रहने वाला नहीं हूँ अपितु समस्त जगत् का अधिवासी हूँ; मैं जिस राजमहल का रहने वाला हूँ, ये लोक–लोकान्तर उसकी केवल एक–एक दीवार मात्र है और अपना सम्बन्ध अखिल जगत् के साथ ही जोड़ना चाहिए। जिस प्रकार स्वास्थ्य का इच्छुक मनुष्य शुद्ध वायु–सेवन के लिए खुले मैदान में जाता है, उसी प्रकार प्रतिदिन असंख्य नक्षत्रों से सुसज्जित इस जगत् में खड़ा होकर इस मन्त्र का उच्चारण करे। ब्रह्म का ध्यान करने की यह प्राचीन पद्धति जैसी महान्–उदार है, वैसी ही अत्यन्त सरल भी है। इसमें किसी प्रकार की व्यर्थता और बनावट का प्रवेश नहीं है। ब्राह्म जगत् और आन्तर बुद्धि, इन दोनों को छोड़कर हमारे पास है ही क्या ? इस जगत् को भगवान् अपनी अथक शक्ति से रात–दिन प्रेरणा दे रहे हैं। इसी बात को अनुभव कर लेने से भगवान् के साथ हमारा सम्बन्ध चिर–स्थापित किया जा सकता है। मैं नहीं जानता कि किसी अन्य कौशल, सामग्री, कृत्रिम साधन अथवा मानसिक विचारोद्वेग से यह होना सम्भव है। इस पुनीत मन्त्र के अभ्यास में अन्य किसी प्रकार के तार्किक ऊहापोह, किसी प्रकार के मतभेद अथवा किसी प्रकार के बखेड़े का अवकाश नहीं है और न इसके अन्दर कोई विशेष व्यक्तिगत समीपता या संकीर्णता पाई जाती है।"

सेवायाम्,

श्री आचार्य देवव्रत,
राज्यपाल,
हिमाचल प्रदेश
शिमला।

विषय : दीक्षान्त समारोहों में काले गाउनों का प्रयोग।

महोदय

सादर नमस्ते ! कुशलं कुशली कामये। निवेदन है कि विश्वविद्यालयों की ओर से जो दीक्षान्त समारोह आयोजित किए जाते हैं, उनमें स्नातक छात्रों/छात्राओं को स्नातक हो जाने के प्रमाण–पत्र प्रदान किए जाते हैं। समारोहों में स्नातकों को काले रंग के गाउन पहनकर आने का आदेश दिया जाता है तथा तदनुसार वे ऐसा ही करने को बाध्य होते हैं।

आप जानते हैं कि ज्ञान का प्रतीक श्वेत रंग (=वस्त्र) है जबकि काला रंग (=वस्त्र) अज्ञान का प्रतीक है व काले गाउन पहनना अंग्रेज़ों की देन है। वैदिक ही नहीं भारतीय संस्कृति में भी काले वस्त्र पहनना–पहनाना अवांछनीय है। आप हिमाचल के जिन विश्वविद्यालयों के कुलपति हैं, कृपया उनमें उक्त समारोहों में काले गाउन पहनने पर प्रतिबंध लगाएं व दीक्षान्त भाषण विदेशी भाषा आंग्ल भाषा में देने पर भी रोक लगाएं क्योंकि हिमाचल प्रदेश के छात्र/छात्राएं राष्ट्रभाषा हिन्दी में दिए भाषण भली प्रकार समझते हैं।

भवदीय :
इन्द्रजित देव

शोक प्रस्ताव

♦आर्य समाज हमीरपुर के साप्ताहिक यज्ञ के उपरान्त समाज के मन्त्री श्री पुरषोतम शर्मा ने सूचित किया कि आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के पूर्व अध्यक्ष एवं दयानन्द मठ चम्बा के अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी का दिनांक ५ अगस्त, २०१५ को देहावसान हो गया। समाज ने एक प्रस्ताव पारित करके स्वामी जी के आर्य समाज के प्रति योगदान की भरपूर प्रशंसा की तथा ईश्वर से प्रार्थना की, उनकी पवित्र आत्मा की सद्गति हो तथा शांति प्राप्त हो। पवित्र आत्मा के सम्मान में दो मिनट का मौन रखा गया। इस अवसर पर श्री योग प्रकाश नन्दा ने कहा कि स्वामी जी ने अपना पूरा जीवन आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए लगा दिया तथा हि.प्र. के कोने–कोने में प्रचार किया और भारत वर्ष के विभिन्न प्रदेशों में अनथक प्रचार किया। उनके मन का संकल्प अभी अधूरा रह गया है वह चाहते थे कि आर्य समाज राजनैतिक रूप से अपनी विशेष पहचान बनाए उस संकल्प को पूरा करने के लिए हमें प्रयत्न करने चाहिए यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

♦आर्य समाज चौलथरा में साप्ताहिक हवन यज्ञ हुआ जिसमें दयानन्द मठ चम्बा के संचालक स्वामी सुमेधानन्द जी के निधन पर शोक व्यक्त किया गया और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए मौन प्रार्थना भी की गई सचिव सरवण सिंह भारद्वाज ने शोक व्यक्त करते हुए बताया कि स्वामी जी बहुत ही कर्मठ, दूरदर्शी, मिलनसार व गरीब और असहायों की सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। आर्य समाज चौलथरा का पुनः जब जीर्णोद्धार करने की बात आई थी तो एक छोटे से आग्रह आर्य समाज चौलथरा को आर्थिक सहयोग तो मिला ही साथ में उनका बहुमूल्य मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ आर्य समाज चौलथरा पुनः उनकी आत्मिक शांति के लिए प्रार्थना करता है।

प्रश्न : क्या जो यह जन्मपत्र है सो निष्फल है ?

उत्तर : हाँ, वह जन्मपत्र नहीं किन्तु उसका नाम 'शोकपत्र' रखना चाहिए क्योंकि जब संतान का जन्म होता है तब सबको आनन्द होता है परन्तु वह आनन्द तब तक होता है कि जब तक जन्मपत्र बनके ग्रहों का फल न सुने। जब पुरोहित जन्मपत्र बनाने को कहता है तब उसके माता–पिता पुरोहित से कहते हैं 'महाराज! आप बहुत अच्छा जन्मपत्र बनाइऐ' जो धनाढय हो तो बहुत सी लाल पीली रेखाओं से चित्र विचित्र और निर्धन हो तो साधारण रीति से जन्म पत्र बनाके सुनाने को आता है। तब उसके माँ–बाप ज्योतिषीजी के सामने बैठ के कहते हैं 'इसका जन्मपत्र अच्छा तो है ?' ज्योतिषी कहता है 'जो है सो सुना देता हूँ। इसके जन्म ग्रह बहुत अच्छे और मित्र ग्रह भी बहुत अच्छे हैं जिनका फल धनाढय और प्रतिष्ठावान्, जिस सभा में जा बैठेगा तो सबके ऊपर उसका तेज पड़ेगा शरीर से आरोग्य और राज्यमानी होगा।' इत्यादि बातें सुनके पिता आदि बोलते हैं 'वाह–वाह ज्योतिषीजी! आप बहुत अच्छे हो।' ज्योतिषीजी समझते हैं इन बातों से कार्य सिद्ध नहीं होता। तब ज्योतिषी बोलता है कि 'ये ग्रह तो बहुत अच्छे हैं परन्तु ये ग्रह क्रूर हैं। अर्थात् फलाने–फलाने ग्रह के योग से ८ वर्ष में इसका मृत्युयोग है।' इसको सुनके माता पितादि पुत्र के जन्म के आनन्द को छोड़ के शोकसागर में डूबकर ज्योतिषी से कहते हैं कि 'महाराज जी! अब हम क्या करें ?' तब ज्योतिषी जी कहते हैं 'उपाय करो।' गृहस्थ पूछे क्या उपाय करें ?' ज्योतिषी जी प्रस्ताव करने लगते हैं कि 'ऐसा–ऐसा दान करो। ग्रह के मन्त्र का जप कराओ और नित्य ब्राह्मणों को भोजन कराओगे तो अनुमान है कि नवग्रहों के विघ्न घट जायेंगे।' अनुमान शब्द इसलिए है कि जो मर जायेगा तो कहेंगे हम क्या करें परमेश्वर के ऊपर कोई नहीं है। हमने बहुत सा यत्न किया और तुमने कराया, उसके कर्म ऐसे ही थे और जो बच जाये तो कहते हैं कि देखो –हमारे मंत्र, देवता और ब्राह्मणों की कैसी शक्ति है ? तुम्हारे लड़के को बचा लिया। यहां यह बात होनी चाहिए कि जो इनके जप पाठ से कुछ न हो तो दूने तिगुने रूपये उनसे ले लेने चाहिऐ और बच जाये तो भी ले लेने चाहिए क्योंकि जैसे ज्योतिषियों ने कहा कि 'इसके कर्म और परमेश्वर के नियम तोड़ने का सामर्थ्य किसी का नहीं' वैसे गृहस्थ भी कहें कि 'यह अपने कर्म और परमेश्वर के नियम से बचा है तुम्हारे करने से नहीं' और तीसरे गुरू आदि भी पुण्य दान करा के आप ले लेते हो तो उनको भी वही उत्तर देना, जो ज्योतिषियों को दिया था।

अब रह गई शीतला और मंत्र तन्त्र यन्त्र आदि। ये भी ऐसे ही ढोंग मचाते हैं। कोई कहता है कि 'जो हम मन्त्र पढ़ के डोरा वा यन्त्र बना देवें तो हमारे देवता और पीर उस मन्त्र यन्त्र के प्रताप से उसको कोई विघ्न नहीं होने देते।' उनको वही उत्तर देना चाहिए कि क्या तुम मृत्यु, परमेश्वर के नियम और कर्मफल से भी बचा सकोगे ? तुम्हारे इस प्रकार करने से भी कितने ही लड़के मर जाते हैं और तुम्हारे घर में भी मर जाते हैं और क्या तुम मरने से बचा सकोगे ? तब वे कुछ भी नहीं कह सकते और वे जान लेते हैं कि यहां हमारी दाल नहीं गलेगी। इससे इन सब मिथ्या व्यवहारों को छोड़कर धार्मिक, सब देश के उपकारकर्ता, निष्कपटता से सबको विद्या पढ़ाने वाले, उत्तम विद्वान् लोगों का प्रत्युपकार करना जैसे वे जगत् का उपकार करते हैं। इस काम को कभी नहीं छोड़ना चाहिए और जितनी लीला रसायन, मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि करना कहते हैं उनको भी महापामर समझना चाहिए।

–सत्यार्थ प्रकाश

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

बुक पोस्ट

सेवा में

आर्य समाज खरीहड़ी का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज सुन्दरनगर (खरीहड़ी) का २१वाँ वार्षिक उत्सव दिनाँक १६ से २१ सितम्बर २०१५ तक धूमधाम और हर्षोल्लास से आर्य समाज यज्ञशाला में मनाया जा रहा है। ठाकुर सोहन लाल, मुख्य संसदीय सचिव एवं स्थानीय विधायक कार्यक्रम के मुख्यातिथि होंगे तथा पं. मनोहर लाल शर्मा, वरिष्ठ एडवोकेट, उच्चतम न्यायालय कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे। राजा हरि सेन, कंवर कमला सिंह जी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया है। इस अवसर पर दयानन्द मठ घण्डरां तह. इन्दौरा के संचालक स्वामी सन्तोषानन्द जी तथा हमीरपुर आर्य समाज के मन्त्री एवं सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री वीरी सिंह जी अपने सुमधुर उपदेशों एवं भजनों की अमृत वर्षा करेंगे। इस अवसर पर स्थानीय विद्वान् भी अपने विचार व्यक्त करेंगे। शनिवार १६ सितम्बर को हवन एवं प्रवचन प्रातः ६ से ११ बजे तक, भजन, प्रवचन एवं भाषण प्रतियोगिता (विषय : बच्चे का विकास माता के साथ) रात्रि ७.३० से ६.३० बजे तक, रविवार २० सितम्बर २०१५ को हवन एवं भजन प्रातः ६.३० से १०.३० बजे तक, प्रवचन प्रातः १०.३० से दोपहर १ बजे तक, प्रीति भोज दोपहर २ बजे से सांय पर्यन्त तथा सोमवार २१ सितम्बर २०१५ को हवन, भजन एवं प्रवचन प्रातः ६.३० से ११ बजे तक आयोजित किया जाएगा। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

–कृष्ण चन्द आर्य, आर्य समाज खरीहड़ी

ईशावास्यमिदं सर्वम्

•ओम् प्रकाश आर्य, आर्य समाज रावत भाटा

अपनी लगनेवाली हर वस्तु तुम्हारी,
औ' पास रहनेवाली भी वस्तु तुम्हारी!
सुखभोग सामग्री जिसको उर से लगाए,
वह प्राण बनने वाली हर वस्तु तुम्हारी!
गर्व, अहं भाव से अधिकार जमाए,
वह मन में बसने वाली हर वस्तु तुम्हारी!
त्यागमय उपभोग हेतु सब दिया हमें,
रग–रग में रमनेवाली हर वस्तु तुम्हारी।
स्वत्व–पट से ढककर रखा उसे सुरक्षित,
चितवन में गड़नेवाली हर वस्तु तुम्हारी!
धन–धाम, सौख्य–सुविधा आनंदप्रदात्री,
जीवन को रंगनेवाली हर वस्तु तुम्हारी!
मन झूम–झूम उठता भौतिक पदार्थों पर,
सुख–बिन्दु करनेवाली हर वस्तु तुम्हारी!
वन–बाग, रम्य उपवन, पशु–पक्षीगण मनोहर,
धरती पर सजनेवाली हर वस्तु तुम्हारी!
सर, शैल, सिंधु, सरिता, नभपिंड जो सभी,
हर वस्तु दिखने वाली हर वस्तु तुम्हारी!
किसको कहूँ मैं अपनी, सब पर तेरी मुहर है,
यह काया चलनेवाली भी नाथ जब तुम्हारी!

साभार

श्री विधि चन्द वर्मा, पूर्व प्रधानाचार्य, गाँव मकड़याणा, डा. जोगिन्दरनगर, जिला मण्डी ₹ ३००, श्री दिला राम (पूर्व शास्त्री), गाँव व डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) ₹ २००, श्री सतपाल बैहल १४६४/४ हर्बल एस्टेट, गुड़गाँव, हरियाणा ₹ २००, श्री देव राज शर्मा, गाँव शान्तिवन, डा. रन्धाडा, तह. सदर, जिला मण्डी ₹ २०० ने सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200
आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को–आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) में भी जमा करवा सकते हैं।